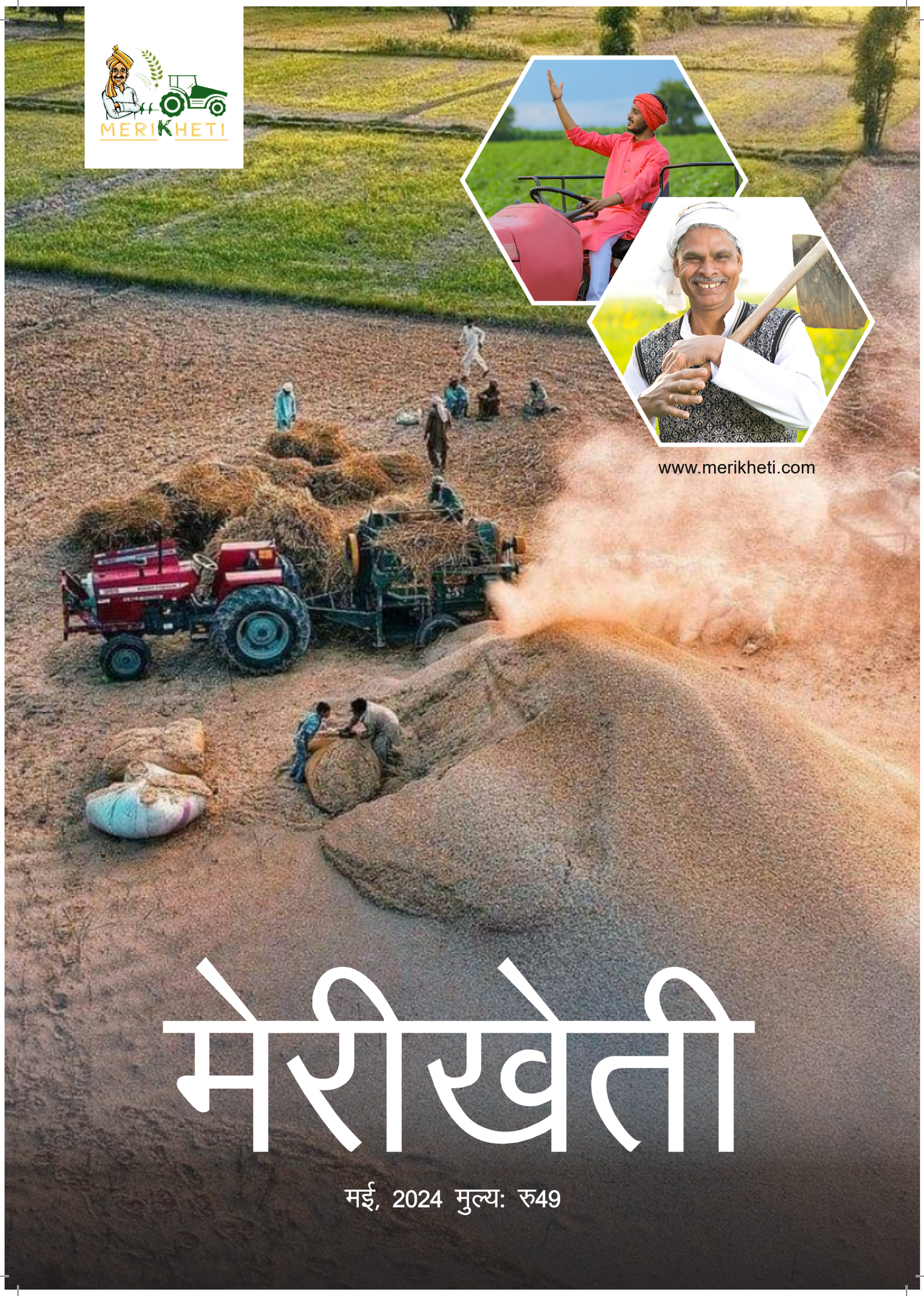

MERIKHETI

www.merikheti.com

मेरीखेती

मई, 2024 मुल्य: रु49

विषय सूची

सम्पादकीय	
सलाहकार मंडल	
खेत खलियान	01 - 06
सब्जी	07 - 12
फल	13 - 15
फूल	16 - 17
मशीनरी	18 - 22
मौसमी व अन्य कृषि सुझाव	23 - 26
किसान समाचार	27 - 29
औषधीय खेती	30
पशुपालन–पशुचारा	31 - 34
प्रगतिशील किसान	35 - 36

विज्ञापन के लिए संपर्क करें : 91-9899991906, 91-8800777501

सम्पादकीय

नैनो यूरया के बाद कापर और जिंक पर रार

देश के अधिकांश राज्यों में बहुसंख्यक किसानों को रासायनिक उर्वरकों का उपयोग करना नहीं आता। वह अपनी मिट्टी की जांच भी नहीं कराते। उन्हें नहीं पता कि उनकी कृषि भूमि में किन तत्वों की कमी है। जब कमी पता नहीं तो वह डीएपी, एनपीके आदि के बैग खेतों में किस आधार पर डाल रहे हैं। उर्वरकों का असंतुलित उपयोग ही फसल उत्पादन एवं फसलों में पोषक तत्वों की संरचना को भी बिगड़ रहे हैं। इन्हीं हालातों को नियंत्रित करने के लिए सरकार का नैनोटेक्नोलॉजी के तरल उर्वरकों पर जोर है। नैनो यूरया–नैनो डीएपी के बाद नैनो जिंक एवं नैनो कॉपर जैसे सूक्ष्म तत्वों के निर्माण को सरकार ने हरी झंडी देदी है।

नैनो यूरिया की प्रभावशीलता को लेकर चल रहे विवाद के बीच केंद्र सरकार ने इफको (इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड) को नैनो जिंक लिक्विड और नैनो कॉपर लिक्विड बनाने के लिए भी मंजूरी दे दी है। केंद्र ने इसकी मंजूरी फर्टिलाइजर कंट्रोल ऑर्डर 1985 के तहत तीन साल के लिए दी है। इसका नोटिफिकेशन जारी कर दिया गया है। पौधों में सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी को दूर करने के लिए फसल पोषण पर दो और नैनो टेक्नोलॉजी आधारित नए प्रोडक्ट जल्द ही बाजार में आ जाएंगे।

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (पीएयू) के वैज्ञानिकों द्वारा नैनो यूरिया की प्रभावकारिता पर दो साल के क्षेत्रीय प्रयोग में पारंपरिक नाइट्रोजन (एन) उर्वरक अनुप्रयोग की तुलना में चावल और गेहूं की पैदावार में काफी कमी पाई गई । अनाज में नाइट्रोजन की मात्रा, जो प्रोटीन उत्पादन के लिए आवश्यक है, में भी गिरावट देखी गई ।शोधकर्ताओं ने पाया कि नैनो यूरिया के उपयोग से गेहूं की पैदावार में 21.6 प्रतिशत और चावल की पैदावार में 13 प्रतिशत की कमी आई है। यह अध्ययन पीएयू में वरिष्ठ मृदा रसायनज्ञ राजीव सिक्का और नैनोसाइंस के सहायक प्रोफेसर अनु कालिया द्वारा 2020–21 और 2021–22 में किया गया था।

जून 2021 में भारतीय किसान और उर्वरक सहकारी (इफको) द्वारा नैनो तरल यूरिया लॉन्च किया गया था, जिसमें दावा किया गया था कि नैनो यूरिया की 500 मिलीलीटर स्प्रे बोतल पारंपरिक उर्वरक के पूरे 45 किलोग्राम बैग का स्थान ले सकती है। केंद्र सरकार ने उर्वरक के विकास के बाद से इसे काफी बढ़ावा दिया है।सवाल उठता है कि जिस देश में सामान्य उर्वरकों का जरूरत के अनुरूप उपयोग करना किस नहीं सीख पाए हैं। वहीं कई राज्यों में तो रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग बेहद कम किया जाता। चीन जैसे देश के किसानों की तुलना में भारत में उर्वरकों का प्रयोग बेहद कम किय जाता है। ऐसे में नैनो टेक्नोलॉजी के उर्वरकों का उपयोग सही तौर तरीके से हो पाना असंभव ही है। हालांकि इफको ने इसके लिए पूरे पूरे दश में एक बड़ी टीम लगा रखी है। दानेदार उर्वरकों की कमी की स्थिति में नैनो टेक्नोलॉजी के उर्वरकों का उपयोग कर किसान अपनी फैसलें लगा सकते हैं। उर्वरक संकट की स्थिति में नैनो उर्वरक एक बेहतर विकल्प हो सकते हैं।

धन्यवाद,

श्री दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

श्री कृष्ण पाठक
फाउंडर, मेरीखेती

डॉ एम सी शर्मा
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति आईवीआरआई इज्जतनगर

प्रो. ए पी सिंह
पूर्व कुलपति, वेटरनरी विश्व विद्यालय, मथुरा

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ हरि शंकर गौड़
पूर्व कुलपति एसबीबीपीयूएटी, मेरठ, साइंटिस्ट, गलगोटिया विश्वविद्यालय

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त) उत्तर प्रदेश

डॉ उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर, भरतपुर, राजस्थान

डॉ जे.पी.एस. डबास
वरिष्ठ वैज्ञानिक आई ए आरआई

डॉ एसके सिंह
प्रोफेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार

डॉ रितेश शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक, बासमती निर्यात विकास फाउंडेशन (एपीडा, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)

डॉ सी बी सिंह
एक्स – सीनियर साइंटिस्ट, IARI, पूसा

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

मक्के की खेती को प्रभावित करने वाला रोग और इसकी रोकथाम

मिलेट्स यानी मोटे अनाज को श्री अन्न भी कहा जाता है। मिलेट्स की पैदावार को प्रोत्साहन देने के लिए भारत सरकार ने विगत वर्ष 2023 को मिलेट्स ईयर के तोर पर मनाया था। जब कभी मोटे अनाज अर्थात मिलेट्स की चर्चा होती है, तो स्वाभाविक रूप से मन में मक्का का प्रतिबिंब प्रदर्शित जरूर होता है। क्योंकि, वर्तमान में रबी सीजन की कटाई का कार्य तकरीब संपन्न हो चुका है। किसान भाई जल्द ही खरीफ फसलों की बुवाई की तैयारी में जुटने लगेंगे। हालाँकि, जिन किसानों की फसल खेत से उठ चुकी है, ऐसे अधिकांश किसान मक्के की खेती करने की तैयारी में भी लग गए हैं। हम आपके लिए मक्का की खेती को हानि पहुँचाने वाले झुलसा रोग और इसके नियंत्रण से जुड़ी जरूरी जानकारी प्रदान करेंगे, ताकि आपको अच्छी उपज लेने में सहयोग मिल सके।

मक्के की खेती में झुलसा रोग

मक्के की फसल में उत्तरी झुलसा रोग लगने का संकट सदैव बना रहता है। अंग्रेजी और वैज्ञानिक भाषा में इसको टर्सिकम लीफ ब्लाइट रोग/Tursicum LeafBlight Disease के नाम से जाना जाता है। झुलसा रोग इतना हानिकारक और खतरनाक है, कि यदि फसल में लग जाए, तो पूरी फसल को बर्बाद करने की क्षमता रखता है। कृषि विशेषज्ञों का कहना है, कि भारत के अंदर बड़ी तादात में किसान भाई मक्के की खेती करते हैं। परंतु, मक्के में कवक रोगों के लगने से इसकी फसल काफी प्रभावित हो जाती है, जिनमें विशेष रूप से उतरी झुलसा लगने का संकट अधिक होता है। क्योंकि, इसका संक्रमण 17 से 31 डिग्री सेल्सियस तापमान सापेक्षिक आर्द्रता 90 से 100 प्रतिशत गीली और आद्र के मौसम में अनुकूल होता है, जो कि फोटोसिंथेसिस प्रक्रिया को प्रभावित करता है। इससे मक्के की उपज में 90% प्रतिशत तक कमी आ जाती है।

झुलसा रोग के क्या–क्या लक्षण हैं ?

बतादें, कि उत्तरी झुलसा रोग का संक्रमण 10 से 15 दिन के पश्चात नजर आने लगता है। इस दौरान फसल में छोटे हल्के हरे भरे रंग के धब्बे नजर आते हैं। साथ ही, पत्तियों पर शिकार के आकार के एक से 6 इंच लंबे भूरे रंग के घाव हो जाते हैं, जिससे पौधे की पत्तियां झड़ कर नीचे गिरने लगती हैं। इससे उपज को काफी हानि होती है।

झुलसा रोग से इस प्रकार बचाव करें ?

कृषि विशेषज्ञों के अनुसार, फसल की बुवाई से पूर्व पुराने अवशेषों को खत्म कर दें, जिससे इस रोग के लगने की संभावना कम हो जाती है। साथ ही, खेतों में पोटैशियम क्लोराइड के तौर पर पोटैशियम का इस्तेमाल करना चाहिए। साथ ही, मैंकोजेब 0.25 प्रतिशत व कार्बेंडाजिम का फसल पर छिड़काव करने से फसल को इस हानिकारक रोग से बचाया जा सकता है।

Coromandel
FUTURE POSITIVE
Ab sab Fit hai!
GROMOR
FITSOL™
Complete nutrition with
just 2 Fertigation grades
GROMOR
FITSOL™
SOLANACEAE
GRADE-1
VEGETATIVE & FLOWERING
N 21 P 12 K 16 S 2
25 Kg
Coromandel
GROMOR
FITSOL™
SOLANACEAE
GRADE-2
FRUITING & MATURITY
N 14 P 5 K 32 S 2
25 Kg

किसान पूसा से धान की इन किस्मों का बीज अब ऑनलाइन खरीद सकते हैं

भारत विश्व में चावल उत्पादन के मामले में दूसरे स्थान पर है। भारत में खरीफ की प्रमुख फसलों में धान का विशेष स्थान है। धान की खेती भारत के उत्तरी और दक्षिणी प्रदेशों में मानसून के मौसम में की जाती है।

साथ ही, कुछ राज्य ऐसे भी हैं जहां धान का सीजन (Paddy Season) वर्ष में दो बार आता है। धान की खेती सिंचित और असिंचित दोनों ही तरह के इलाकों में की जाती है। बतादें, कि धान की खेती छिड़काव और रोपाई विधि के माध्यम से की जाती है। बतादें, कि रोपाई विधि से धान का उत्पादन काफी अच्छा हांसिल होता है। भारत में धान की बहुत सारी ऐसी उन्नत किस्में हैं, जिनकी खेती करके आप काफी शानदार लाभ कमा सकते हैं। इनमें धान की "PB 1692" और "PB 1509" किस्म शामिल है, जिन्हें आप ऑनलाइन भी खरीद सकते हैं।

धान की पीबी 1692 किस्म / Paddy PB 1692 Variety

पूसा बासमती 1692 धान की उन्नत किस्मों में से एक है। यह एक शीघ्र पकने वाली बासमती धान की प्रजाति है। इसको पकने में तकरीबन 110 से 115 दिनों का समय लगता है और ज्यादा उत्पादन होता है। इसी खूबी की वजह से यह बासमती उत्पादक क्षेत्र में धान की फसल की समय पर कटाई करने में सहयोग करता है। ताकि फसल के पश्चात अन्य कार्यों को करने के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है। अगर समय पर खेतों की सफाई की जाती है, तो इससे पर्यावरण प्रदूषण को भी कम करने में सहायता मिलती है। इसके अतिरिक्त बासमती जीआई क्षेत्र में आने वाली गेहूं की फसल की भी वक्त पर बुवाई में सहायता मिलती है। किसान धान की पीबी 1692 किस्म की खेती कर करीब 20 से 24 क्विंटल प्रति एकड़ फसल हांसिल कर सकते हैं। वहीं, प्रति एकड़ में रोपाई के लिए 5 किलो बीज पर्याप्त होते हैं।

धान की पीबी 1509 किस्म / Paddy PB 1509 Variety

पूसा बासमती 1509 धान भी उन्नत किस्मों में से एक है। इसको 2013 में सीवीआरसी द्वारा बासमती उगाने वाले इला. कों जैसे कि – दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी यूपी, उत्तराखंड और जम्मू और कश्मीर के लिए जारी किया गया था। यह एक शीघ्रता से पकने वाली बासमती धान की किस्म है। इसको पकने में 115 से 120 दिनों का वक्त लगता है। पूसा बासमती 1509 धान की किस्म 5 से 6 सिंचाई तक बचाने में मदद करती है, जिससे आप लगभग 33: प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं। किसान धान की इस किस्म की खेती से करीब 27 से 28 क्विंटल प्रति एकड़ फसल हांसिल कर सकते हैं। प्रति एकड़ भूमि में इस किस्म की धान की रोपाई के लिए 4 से 5 किलो बीज पर्याप्त होते हैं।

धान की ऑनलाइन खरीद कैसे करें

अगर आप धान की "PB 1692" और "PB 1509" किस्म को खरीदना चाहते हैं, तो आप इसको घर बैठे ऑनलाइन माध्यम से भी ऑर्डर कर सकते हैं। अब आप एनएससी के उत्तम किस्म के धान 'पीबी 1692' और पीबी' किस्म के सर्टिफाइड बीज के 10 किलोग्राम के पैकट को ऑनलाइन माध्यम से खरीद सकते हैं। यहां आपको छैҍ धान पीबी 1509 बीज के 10 किलोग्राम का पैकट 850 रुपये में मिलता है। वहीं, NSC धान पीबी 1509 बीज के 10 किलोग्राम के पैकट की कीमत 800 रुपये निर्धारित की गई है। अभी ऑर्डर करने के लिए https://mystore-in/en/search/nsc&paddy लिंक पर क्लिक करें।

ग्वार की आधुनिक खेती से जुड़े संपूर्ण प्रबंधन व बिंदुओं की अहम जानकारी

आज के समय में किसानों को आधुनिकता और नवीन तकनीकों व लाभकारी फसलों का चयन करने की आवश्यकता है। किसानों की आर्थिक स्थिति में निरंतर गिरावट आने की एक वजह यह भी है कि किसान अभी भी परंपरागत फसलों का ही उत्पादन करता है।

इस वजह से उनकी फसल भंडारण में सरप्लस में रहती है, जिसके चलते किसान को उसकी फसल का सही मूल्य नहीं मिल पाता है। मेरीखेती द्वारा प्रसारित किए गए लेख और देश के गांव–गांव जाकर निःशुल्क आयोजित की जाने वाली मेरीखेती किसान पंचायत में भी निरंतर कृषकों को कृषि में आधुनिकता और शुद्धता को अपनाने के लिए प्रेरित किया जाता है। क्योंकि, जब तक किसान माँग और मौसम के अनुरूप फसल का चयन नहीं करेगा तब तक किसान की आर्थिक स्थिति सुदृण होने काफी कठिन है।

ग्वार की आधुनिक खेती

इसी कड़ी में आज हम आपको अच्छा मुनाफा दिलाने वाली फसल की जानकारी देंगे, जिसको हम ग्वार की फसल के नाम से जानते हैं। ग्वार की खेती के लिए आवश्यक नहीं कि सिंचित क्षेत्र ही हो, यह असिंचित क्षेत्र में भी आसानी से की जा सकती है। ग्वार एक सूखा प्रतिरोधी दलहनी फसल है। इसमें गहरी जड़ प्रणाली होने की वजह से पानी सोखने की क्षमता अधिक होती है। बतादें, कि ग्वार के गम से विभिन्न प्रकार के उत्पाद और पशु आहार निर्मित किए जाते हैं, जिससे इस फसल की बाजार में हर समय मांग बनी रहती है। मेरीखेती के इस लेख में आपको ग्वार की आधुनिक खेती की पूरी जानकारी प्रदान करेंगे।

ग्वार की फसल के लिए खेत की तैयारी

किसान भाई अगर ग्वार की खेती करने जा रहे हैं, तो सबसे पहले आपको जमीन तैयार करनी होगी। इसके लिए अधिक खरपतवार वाली भूमि की गर्मी के मौसम में एक जुताई करें। वहीं, वर्षा के साथ 1 से 2 जुताई कर खेत तैयार कर लें। अगर संभव हो सके तो एक हेक्टेयर के हिसाब से 20 से 25 गाडी गोबर की खाद डालें। इससे अंकुरण अच्छा होगा और प्रति हेक्टेयर उत्पादन बढ़ेगा। पहली जुताई मृदा पलटने वाले हल या डिस्क हैरो से करनी चाहिए। इससे कम से कम 20 से 25 सेमी गहरी मृदा ढीली हो जाती है। इसके बाद एक या दो जुताई करके एकसार खेत तैयार करना चाहिए। इसमें जल निकासी की समुचित व्यवस्था होगी।

ग्वार की उत्तम खेती के लिए मृदा व जलवायु

यहां बतादें, कि ग्वार की फसल यूं तो कई तरह की मृदा में की जा सकती है। लेकिन, बेहतरीन फसल के लिए दोमट मृदा सबसे उपयुक्त मानी जाती है। यह भारी मृदा पीएच मान 7 से 8.5 तक में उगाई जा सकती है। ग्वार कम मध्यम वर्षा वाले इलाकों की बारानी फसल है। इसे लवणीय और क्षारीय मृदा में नहीं उगाया जा सकता।

ग्वार की बुवाई का उपयुक्त समय कौन–सा होता है ?

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि ग्वार की फसल की बुवाई का समुचित वक्त जून का अंतिम सप्ताह या जुलाई का प्रथम पखवाड़ा रहता है। वहीं, इसकी उन्नत किस्मों में आरजीसी–936, आरजीसी 1002, आरजीसी–1003, आरजीसी–1066, एचजी–365, जीसी–1, आरजीसी 1017, एचजीसी 563, आरजीएम 112,आरजीसी 1038 और आरजीसी 986 हैं।

बीजोपचार और रोग नियंत्रण कैसे करें?

किसान भाइयों को यह सलाह दी जाती है, कि ग्वार की फसल की बुवाई से पूर्व बीजों को बेहतर से उपचारित कर लेना चाहिए। इसके लिए 2.0 ग्राम बाविस्टीन से किलोग्राम बीज को उपचारित कर बोएं।

आंगमारी रोग की रोकथाम के लिए बीज को स्ट्रैप्टोसाइक्लिन 200 पीपीएम या एग्रोमाईसीन 250 पीपीएम के घोल में 3 घंटे में भिगोकर उपचारित कर बुवाई करें। वहीं, जड़ गलन रोग के नियंत्रण के लिए कार्बेण्डाइजिम या थाओफोट मिथाइल 70 डब्ल्यूपी 2 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार करें। इस बीमारी के जैविक नियंत्रण के लिए टाइकोडर्मा 10 ग्राम प्रति किलो की दर से उपचारित करें।

ग्वार की बुवाई का समुचित प्रबंधन

ग्वार की बुआई के लिए बीज की उचित मात्रा के साथ ही इसकी सही विधि अपनाना लाभदायक हो सकता है। वैसे ग्वार की बुआई ड्रिल द्वारा या दो पोरों से की जाती है। कतार से कतार की दूरी 30 सेमी और पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर होनी चाहिए। कम वर्षा और कम उपजाऊ वाले क्षेत्रों में बीज की मात्रा ज्यादा होनी चाहिए। वैसे प्रति हेक्टेयर के हिसाब से 15 से 20 किलोग्राम बीज डालना चाहिए।

ग्वार की फसल में उर्वरक का प्रयोग

बतादें, कि शुष्क और अर्धशुष्क वाले क्षेत्रों में जहां हल्की मिट्टी पाई जाती है वहां नत्रजन 20 किलोग्राम और फास्फोरस 40 किलोग्राम डालना चाहिए। ग्वार एक दलहनी फसल है, इसलिए नत्रजन और फास्फोरस दोनो की सारी मात्रा बुवाई के दौरान ही डालें।

ग्वार की निराई–गुड़ाई कब और कैसे करें ?

ग्वार की फसल में खरपतवार के नियंत्रण के लिए निराई और गुड़ाई करना बेहद आवश्यक है। यह फसल की एक माह की अवस्था में संपन्न कर देनी चाहिए। सके लिए इमेजाथाइपर 10ः प्रतिशत एसएल दवा की 10 ग्राम सक्रिय तत्व प्रति बीघा की दर से 100 से 125 लीटर पानी में डाल कर बुवाई के 30–35 दिन बाद स्प्रे करना चाहिए।

ग्वार की फसल में सिंचाई प्रबंधन कैसे करें ?

ग्वार की फसल की बिजाई जुलाई के अंतिम पखवाड़े में होती है। यदि दो सप्ताह तक अच्छी बारिश नहीं हो तो सिंचाई करनी चाहिए। इसके बाद अगस्त या सितंबर के आखिरी सप्ताह में सिंचाई की जानी चाहिए। ग्वार की फसल नवंबर में पक कर तैयार हो जाती है। अमूमन एक हेक्टेयर में 10 से 15 क्विंटल फसल होती है।

ग्वार की फसल में सिंचाई प्रबंधन कैसे करें ?

ग्वार की फसल की बिजाई जुलाई के अंतिम पखवाड़े में होती है। यदि दो सप्ताह तक अच्छी बारिश नहीं हो तो सिंचाई करनी चाहिए। इसके बाद अगस्त या सितंबर के आखिरी सप्ताह में सिंचाई की जानी चाहिए। ग्वार की फसल नवंबर में पक कर तैयार हो जाती है। अमूमन एक हेक्टेयर में 10 से 15 क्विंटल फसल होती है।

ग्वार के व्यापारिक उपयोग से भी लाखों की आय

यहां बता दें कि ग्वार एक औद्योगिक फसल है। इससे गम या गोंद बनता है। इसके अनेक उत्पाद तैयार किए जा सकते हैं। पहले जिन उद्योगों में अरारोट या आलू और चावल के पदार्थों का प्रयोग किया जाता था अब उनमें ग्वार के गम का प्रयोग किया जाता है। यह सूती कपड़ो के निर्माण, कागज बनाने, सौंन्दर्य प्रसाधन, दवाइयों आदि के काम आता है। किसान या अन्य लोग ग्वार के गम का उद्योग लगा कर लाखों रुपये सालाना कमाई कर सकते हैं। अमेरिका सहित कई देशों में भारतीय देसी ग्वार की खासी मांग रहती है। यह स्टार्च से अधिक गाढ़ा घोल बनाने में सक्षम है।

उड़द की खेती से जुड़ी विस्तृत जानकारी

उड़द एक दलहन फसलों के अंतर्गत आने वाली फसल है, जिसकी खेती भारत के राजस्थान, बिहार, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के सिंचित इलाकों में की जाती है। यह एक अल्प समयावधी की फसल है, जो कि 60–65 दिनों के समयांत. राल में पक जाती है। इसके दानों में 60% प्रतिशत कार्बोहाइ. ड्रेट, 24 फीसदी प्रोटीन तथा 1.3 फीसदी वसा पाया जाता है।

उड़द की खेती के लिए भूमि का चयन एवं तैयारी

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि उड़द की खेती के लिए हल्की रेतीली, दोमट मृदा उपयुक्त मानी जाती है। वहीं, समुचित जल निकासी की बेहतरीन व्यवस्था होना चाहिए। वहीं, मिट्टी का पीएच मान 6.5 से 7.8 के बीच होना चाहिए। इसकी बुवाई के लिए खेत की दो–तीन जुताई बारिश से पहले करनी चाहिए। वहीं, शानदार वर्षा होने के पश्चात बुवाई करनी चाहिए। ताकि फसल की बेहतर बढ़वार में सहायता मिल सके।

उड़द की खेती के लिए उन्नत प्रजातियां इस प्रकार हैं

1) चितकबरा रोग प्रतिरोधी किस्में

वी.बी.जी–04–008, वी.बी.एन–6, माश–114, को.–06. माश–479, पंत उर्द–31, आई.पी.यू–02–43, वाबन–1, ए.डी.टी–4 एवं 5, एल.बी.जी–20 आदि।

2) खरीफ सीजन की किस्में

के.यू–309, के.यू–99–21, मधुरा मिनीमु–217, ए.के.यू–15 आदि।

3) रबी सीजन की किस्में

के.यू–301, ए.के.यू–4, टी.यू.–94–2, आजाद उर्द–1, मास–414, एल.बी.जी–402, शेखर–2 आदि।

4) शीघ्र पकने वाली किस्में

प्रसाद, पंत उर्द–40 तथा वी.बी.एन–5।

उड़द की खेती के लिए बुवाई का समय व तरीका

खरीफ सीजन में जून के अंतिम सप्ताह में पर्याप्त बारिश के उपरांत उड़द की बुवाई करनी चाहिए। इसके लिए कतार से कतार की दूरी 30 सेंटीमीटर, पौधों से पौधों की दूरी 10 सेंटीमीटर रखनी चाहिए। वहीं, बीज को 4 से 6 सेंटीमीटर की गहराई पर बोएं। वहीं, गर्मी के दिनों में उड़द की बुवाई फरवरी के तीसरे सप्ताह से अप्रैल के पहले सप्ताह तक की जा सकती है।

उड़द की खेती के लिए बीज की मात्रा इस प्रकार है

खरीफ सीजन के लिए प्रति हेक्टेयर 12 से 15 किलोग्राम बीज पर्याप्त होता है। वहीं यदि आप गर्मी में उड़द की खेती कर रहे हैं, तो प्रति हेक्टेयर 20 से 25 किलोग्राम बीज की मात्रा लेनी पड़ेगी।

उड़द की खेती के लिए बीजोपचार इस प्रकार करें

उड़द की बुवाई से पहले इसके बीज को 2 ग्राम थायरम और 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम के मिश्रण से प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित करना चाहिए। इसके बाद बीज को इमिडाक्लोप्रिड 70 डब्ल्यूएस की 7 ग्राम मात्रा लेकर प्रति किलोग्राम बीज को शोधित करना चाहिए। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि बीज शोधन को कल्चर से दो तीन दिन पहले ही कर लेना चाहिए। इसके पश्चात 250 ग्राम राइजोबियम कल्चर से बीजों को उपचारित किया जाता है। इसके लिए 50 ग्राम शक्कर गुड़ को आधा या एक लीटर पानी में अच्छी तरह से उबालकर ठंडा कर लें। फर इसमें राइजोबियम कल्चर डालकर सही तरीके से हिला लें। अब 10 किलोग्राम बीज की मात्रा को इस घोल से शानदार ढ़ंग से उपचारित करें। उपचारित बीज को 8 से 10 घंटे तक छाया में रखने के पश्चात ही बिजाई करनी चाहिए।

उड़द की खेती के लिए खाद एवं उर्वरक का उपयोग

उड़द की खेती के लिए प्रति हेक्टेयर नाइट्रोजन 15 से 20 किलोग्राम, फास्फोरस 40 से 50 किलोग्राम तथा पोटाश 30 से 40 किलोग्राम खेत की अंतिम जुताई के समय डालनी चाहिए। 100 किलोग्राम डीएपी से नाइट्रोजन तथा फास्फोरस की पूर्ति हो जाती है।

उड़द की खेती के लिए सिंचाई कैसे करनी चाहिए

सामान्य तौर पर वर्षाकालीन उड़द की खेती में सिंचाई करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। परंतु, फली बनते समय खेत में पर्याप्त नमी नहीं है तो एक सिंचाई कर देनी चाहिए। वहीं, जायद के सीजन में उड़द की खेती के लिए 3 से 4 सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। इसके लिए पलेवा करने के पश्चात बुवाई की जाती है। फिर 2 से 3 सिंचाई 15 से 20 दिन के समयांतराल पर करनी चाहिए। साथ ही, इस बात का विशेष ध्यान रखें कि फसल में फूल बनते वक्त पर्याप्त नमी होनी चाहिए।

उड़द की खेती के लिए कटाई और मड़ाई इस प्रकार करें

60 से 65 दिनों बाद जब उड़द की फलियां 70 से 80 फीसद पक जाए तब हंसिया से इसकी कटाई की जाती है। इसके उपरांत फसल को 3 से 4 धूप में अच्छी तरह सुखाकर थ्रेसर की सहायता से बीज और भूसे को अलग कर लिया जाता है।

प्रति हेक्टेयर उड़द की खेती से कितनी उपज मिलती है

उड़द की खेती से प्रति हेक्टेयर 12 से 15 क्विंटल तक उत्पादन बड़ी सहजता से प्राप्त हो जाता है। उत्पादन को धूप में बेहतर तरीके से सुखाने के उपरांत जब बीजों में 8 से 9 फीसद नमी बच जाए तब सही तरीके से भंडारण करना चाहिए।

जानें कोकोपीट उर्वरक से पौधों को क्या लाभ और इसे बनाने की विधि

भारत के बड़े शहरों में मृदा की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए कोको पीट का उपयोग किया जाता है। इस कोको पीट को नारियल फाइबर, कॉयर फाइबर या कॉयर के तोर पर भी जाना जाता है। कोकोपीट नारियल के छिलकों को पीसकर निर्मित किया जाता है। इसकी उर्वरकता में पौधे की बढ़ोतरी के लिए बहुत सारे पोषक तत्व मिलाये जाते हैं। इसका उपयोग फूल और सब्जियों की पैदावार के लिए किया जाता है। कही भी खेती करने के लिए मृदा अत्यंत आवश्यक चीज है। ऐसे में शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए मृदा का व्यवस्था करना एक बड़ी चुनौती है। अब अगर आप शहर में रहकर खेती करना चाहते हैं, तो इस तरीके को स्वीकार करके आप अपनी छत पर भी छोटी–छोटी थैलियों में सब्जियां उगा सकते हैं।

पौधों में कोकोपीट के क्या–क्या फायदे हैं

किचन गार्डन में कोकोपीट उर्वरक का इस्तेमाल करने से बहुत सारे फायदे होते हैं। पौधों में कोको पीट डालने से मृदा में नमी बनी रहती है। इससे बीजों या पौधों में फंगल रोग नहीं लगते और बीज तेजी से बढ़ते हैं। मृदा में कोको पीट मिलाने से खरपतवार ज्यादा बढ़ने से बचते हैं। पानी सोखने की अधिक क्षमता के कारण पौधा मिट्टी में नम रहता है और उसकी बढ़ोत. री भी शानदार होती है। कोकोपीट डालने से पौधे की जड़ें भी मजबूत होती हैं।

कोकोपीट और मृदा तैयार करने का सही तरीका

सर्वप्रथम कोकोपीट ईंटों को एक बाल्टी में डाल लें। अब इसमें एक या दो मग पानी डालकर बारीक तोड़ लें और 20 मिनट के लिए छोड़ दें। यहां पौधे की मिट्टी को थोड़ा ढीला कर लें। इसके बाद कोकोपीट को पानी से निकालकर मृदा में डालें और मिट्टी को बेहतर ढ़ंग से मिला दें। कोकोपीट का उपयोग बीज बोते समय भी किया जा सकता है। पौधे के लिए मृदा 40%, कोकोपीट 30% और गोबर की खाद या वर्मीकम्पोस्ट 30% कोकोपीट के साथ मिलाकर भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

कोकोपीट घर पर इस तरह बना सकते हैं

सभी छिलकों को इकट्ठा करके सबसे पहले किसी साफ जगह पर धूप में तीन–चार दिन के लिए सुखाने के लिए रख दें। अब इन छिलकों को कैंची से छोटे–छोटे टुकड़ों में काट लें। ध्यान रखें कि कोई भी टुकड़ा ज्यादा ठोस न हो, किसी भी ठोस टुकड़े को अलग से हटा दें। अब इन छिलकों को ग्राइंडर मिक्सर से पीस लें। छिलकों को तब तक पीसना है जब तक वह पाउडर न बन जाए। हालाँकि, नारियल के छिलकों को पूर्ण रूप से पीसना संभव नहीं है।

परंतु, इसमें कुछ रेशे रह जाते हैं। इसलिए पाउडर को अलग से छान लें और रेशों को अलग कर लें। अब पाउडर में पानी मिलाएं और 2–3 घंटे के लिए छोड़ दें। जब यह पाउडर पानी को बेहतर ढ़ंग से सोख ले तो इसे निचोड़ लें, इससे शेष पानी निकल जाएगा।

IIL के फसल सुरक्षा उत्पादों के संग
सुरक्षित फसल , जिम्मेदार कल

insecticides (INDIA) LIMITED | हर क़दम, हम क़दम

मई–जून में करें फूलगोभी की खेती मिलेगा शानदार मुनाफा

गोभी वर्गीय सब्जियों में फूलगोभी का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। इसकी खेती विशेष तोर पर श्वेत, अविकसित व गठे हुए पुष्प पुंज की पैदावार के लिए की जाती है। इसका इस्तेमाल सलाद, बिरियानी, पकौडा, सब्जी, सूप और अचार इत्यादि निर्मित करने में किया जाता है। साथ ही, यह पाचन शक्ति को बढ़ाने में बेहद फायदेमंद है। यह प्रोटीन, कैल्शियम और विटामिन 'ए' तथा 'सी' का भी बेहतरीन माध्यम है।

फूलगोभी की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

फूलगोभी की सफल खेती के लिए ठंडी और आर्द्र जलवायु सबसे अच्छी होती है। दरअसल, अधिक ठंड और पाला का प्रकोप होने से फूलों को काफी ज्यादा नुकसान होता है। शाकीय वृद्धि के दौरान तापमान अनुकूल से कम रहने पर फूलों का आकार छोटा हो जाता है। एक शानदार फसल के लिए 15–20 डिग्री तापमान सबसे अच्छा होता है।

फूलगोभी की प्रमुख उन्नत प्रजातियां

फूलगोभी को उगाए जाने के आधार पर फूलगोभी को विभिन्न वर्गो में विभाजित किया गया है। इसकी स्थानीय तथा उन्नत दोनों तरह की किस्में उगाई जाती हैं। इन किस्मों पर तापमान और प्रकाश समयावधि का बड़ा असर पड़ता है। अत: इसकी उत्तम किस्मों का चयन और उपयुक्त समय पर बुआई करना बेहद जरूरी है।

अगर अगेती किस्म को विलंब से और पिछेती किस्म को शीघ्र उगाया जाता है तो दोनों में शाकीय वृद्धि ज्यादा हो जाती है।

- फूल गोभी की अगेती किस्मेंरू अर्ली कुंआरी, पूसा कतिकी, पूसा दीपाली, समर किंग, पावस, इम्प्रूब्ड जापानी।
- फूल गोभी की मध्यम किस्मेंरू पंत सुभ्रा,पूसा सुभ्रा, पूसा सिन्थेटिक, पूसा स्नोबाल, के.–1, पूसा अगहनी, सैगनी, हिसार नं.–1 ।
- फूल गोभी की पिछेती किस्मेंरू पूसा स्नोबाल–1, पूसा स्नोबाल–2, स्नोबाल–16 ।

फूलगोभी के लिए जमीन की तैयारी

फूलगोभी की खेती ऐसे तो हर तरह की जमीन में की जा सकती। लेकिन, एक बेहतर जल निकासी वाली दोमट या बलुई दोमट जमीन जिसमें जीवांश की भरपूर मात्रा उपलब्ध हो, इसके लिए बेहद उपयुक्त मानी जाती है। इसकी खेती के लिए बेहतर ढ़ंग से खेत को तैयार करना चाहिए। इसके लिए खेत को ३–४ जुताई करके पाटा मारकर एकसार कर लेना चाहिए।

फूलगोभी की खेती में खाद एवं उर्वरक

फूलगोभी की उत्तम पैदावार हांसिल करने के लिए खेत के अंदर पर्याप्त मात्रा में जीवांश का होना बेहद अनिवार्य है। खेत में 20–25 टन सड़ी हुई गोबर की खाद या कम्पोस्ट रोपाई के 3–4 सप्ताह पहले बेहतर ढ़ंग से मिला देनी चाहिए। इसके अतिरिक्त 120 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस एवं 40 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से देनी चाहिए। नाइट्रोजन की एक तिहाई मात्रा एवं फास्फोरस तथा पोटाश की पूरी मात्रा आखिरी जुताई या प्रतिरोपण से पूर्व खेत में अच्छी तरह मिला देनी चाहिए। वहीं, शेष आधी नाइट्रोजन की मात्रा को दो बराबर भागों में बांटकर खड़ी फसल में 30 और 45 दिन बाद उपरिवेशन के तोर पर देना चाहिए।

फूलगोभी की खेती में बीजदर, बुवाई और विधि

फूलगोभी की अगेती किस्मों का बीज डॉ 600–700 ग्राम और मध्यम एवं पिछेती किस्मों का बीज दर 350–400 ग्राम प्रति हेक्टेयर है। फूलगोभी की अगेती किस्मों की बुवाई अगस्त के अंतिम सप्ताह से 15 सितंबर तक कर देनी चाहिए। वहीं, मध्यम और पिछेती प्रजातियों की बुवाई सितंबर के बीच से पूरे अक्टूबर तक कर देनी चाहिए।

फूलगोभी के बीज सीधे खेत में नहीं बोये जाते हैं। अतरू बीज को पहले पौधशाला में बुआई करके पौधा तैयार किया जाता है। एक हेक्टेयर क्षेत्र में प्रतिरोपण के लिए लगभग 75–100 वर्ग मीटर में पौध उगाना पर्याप्त होता है। पौधों को खेत में प्रतिरोपण करने के पहले एक ग्राम स्टेप्टोसाइक्लिन का 8 लीटर पानी में घोलकर 30 मिनट तक डुबाकर उपचारित कर लें। उपचारित पौधे की खेत में लगाना चाहिए। अगेती फूलगोभी के पौधों कि वृद्धि अधिक नहीं होती है। अतरू इसका रोपण कतार से कतार 40 सेंमी. पौधे से पौधे 30 सेंमी. की दूरी पर करना चाहिए। परंतु, मध्यम एवं पिछेती किस्मों में कतार से कतार की दूरी 45–60 सेंमी. और पौधे से पौधे की दूरी 45 सेंमी. तक रखनी चाहिए।

फूलगोभी की खेती में सिंचाई प्रबंधन

पौधों की अच्छी बढ़ोतरी के लिए मृदा में पर्याप्त मात्रा में नमी का होना बेहद जरूरी है। सितंबर माह के पश्चात 10 या 15 दिनों के अंतराल पर जरूरत के अनुरूप सिंचाई करते रहना चाहिए। ग्रीष्म ऋतु में 5 से 7 दिनों के अंतर पर सिंचाई करते रहना चाहिए।

फूलगोभी की खेती में खरपतवार नियंत्रण

फूलगोभी में फूल तैयार होने तक दो–तीन निकाई–गुड़ाई से खरपतवार का नियन्त्रण हो जाती है, परन्तु व्यवसाय के रूप में खेती के लिए खरपतवारनाशी दवा स्टाम्प 3.0 लीटर को 1000 लीटर पानी में घोल कर प्रति हेक्टेयर का छिड़काव रोपण के पहले काफी लाभदायक होता है।

फूलगोभी की खेती में निराई–गुड़ाई और मृदा चढ़ाना

पौधों कि जड़ों के समुचित विकास हेतु निकाई–गुड़ाई अत्यंत आवश्यक है। एस क्रिया से जड़ों के आस–पास कि मिटटी ढीली हो जाती है और हवा का आवागमन अच्छी तरह से होता है जिसका अनुकूल प्रभाव उपज पर पड़ता है। वर्षा ऋतु में यदि जड़ों के पास से मिटटी हट गयी हो तो चारों तरफ से पौधों में मिटटी चढ़ा देना चाहिए।

शिमला मिर्च की खेती के लिए उपयुक्त मृदा एवं जलवायु, किस्में और बुवाई का समय

शिमला मिर्च का सब्जी के रूप में सेवन करना बहुत सारे लोगों को काफी पसंद है। इसलिए सालभर शिमला मिर्च की मांग बनी रहती है। दरअसल, शिमला मिर्च मध्य क्षेत्रों की एक प्रमुख नकदी फसल है। इसकी पैदावार विशेष रूप से कांगड़ा, मंडी, कुल्लू व चम्बा, सोलन और सिरमौर में की जाती है। शिमला मिर्च की खेती के लिए बेहतर जल निकासी वाली मध्यम रेतीली दोमट मृदा वाली जमीन सबसे अच्छी होती है। मृदा का पीएच मान 5.5 से 6.8 तथा जैविक कार्बन 1% प्रतिशत से ज्यादा होनी चाहिए। मृदा में पीएच स्तर, जैविक कार्बन, गौण पोषक तत्व (एनपीके), सूक्ष्म पोषक तत्व तथा खेत में सूक्ष्म जीवों के प्रभाव की मात्रा की जांच करवाने के लिए साल में एक बार मृदा परीक्षण बेहद आवश्यक है। अगर जैविक कार्बन तत्व एक प्रतिशत से कम हो तो खेत में 20–25 टन/हे० गोबर की खाद का इस्तेमाल करें। साथ ही, खेत में अच्छी तरह से 2–3 बार हल चलाकर गोबर को मिलाएं। हर बुआई के उपरांत सुहागा प्रयोग में लाऐं, जिससे कि खेत में किसी प्रकार के ढेले न रहें और खेत सही तरह से एकसार हो सके।

शिमला मिर्च की बुवाई का समय

शिमला मिर्च की बुवाई का समय निचले पर्वतीय क्षेत्रों में – फरवरी से मार्च तो वहीं मध्य पर्वतीय क्षेत्रों में मार्च से मई का होता है। ऊंचे पर्वतीय क्षेत्र – शिमला मिर्च की रोपण योग्य पौध को निचले या मध्य पर्वतीय इलाकों से लाना अथवा पौध को नियन्त्रण वातावरण में इस प्रकार तैयार करें, जिससे अप्रैल–मई में रोपाई हो सके। बीज अंकुरण के समय तापमान 20° सैल्सियस होना चाहिए। जब पौध 10–15 सें.मी. ऊंची हो जाए तो खेत में शाम के समय इसकी रोपाई करें। रोपाई के बाद सिंचाई करना और कुछ दिनों तक सुबह–शाम पानी देना अति आवश्यक है।

शमला मिर्च की कुछ अनुमोदित किस्में

आपकी जानकारी के लिए शिमला मिर्च की कुछ अनुमोदित किस्मों की जानकारी। इन किस्मों में केलीफोर्निया वन्डर, यलो वन्डर, सोलन भरपूर, भारत, सोलन संकर –1, सोलन संकर –2, है। इंदिरा, डौलर एवं विभिन्न स्थानीय किस्में।

शिमला मिर्च में मृदा उर्वरक प्रबंधन

फलीदार जैसी दलहनी परिवार की फसलों के साथ आवर्तन से मृदा में नाईट्रोजन की स्थिति काफी मजबूत होती है। खेत में तीन–चार बार हल चलाएं और हर एक जुताई के उपरांत सुहागा चलाएं, जिससे कि मृदा भुरभुरी हो जाए। खेत में 20 टन/हे० गोबर की खाद तथा 2 टन/हे० बी.डी. कम्पोस्ट अथवा 15 टन/हे० वर्मी कम्पोस्ट तथा 2 टन/हे० बी.डी. कम्पोस्ट डालें।

शिमला मिर्च की खेती में खरपतवार प्रबंधन

खरपतवार पर काबू करने के लिए आपको फसल चक्र अपनाना चाहिए। हाथ द्वारा खरपतवार निकालने से मृदा काफी ढीली हो जाती है, जो कि मृदा को काफी भुरभुरा बनाती है। रोपाई के 30–50 दिन तक खरपतवार को ना उगने दें। तीन–चार बार गुड़ाई के साथ खरपतवार को बाहर निकाल दें।

शिमला मिर्च की खेती में सिंचाई प्रबंधन

बतादें, कि प्रतिरोपण के शीघ्रोपरान्त फूल आने पर और फल विकास की स्थिति में जल का अभाव नहीं होना चाहिए। शुष्क मौसम के दौरान प्रतिरोपण के पश्चात प्रथम महीने 3–4 दिन के समयांतराल पर सिंचाई और उसके बाद फसल तैयार होने तक 7–10 दिन के अन्तराल पर जल निकासी पर अधिक ध्यान दें। खेतों में ज्यादा नमी आने की वजह से फसल बर्बाद हो जाती है। इस वजह से खेत में पानी को ठहरने ना दें।

ग्रीष्मकालीन तोरई की खेती किसानों को कम समय में अच्छा लाभ दिला सकती है

किसान भाई तोरई की खेती कर अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। महाराष्ट्र में किसान इसकी बड़े स्तर पर खेती करते हैं। तोरई की बाजारों में सदैव मांग बनी रहती है। यह एक बेल वाली कद्दूवर्गीय सब्जी है, जिसको बड़े खेतों के अतिरिक्त छोटी गृह वाटिका में भी उगाया जा सकता है।

तोरई की खेती को कद्दूवर्गीय फसलों में शुमार किया जाता है, जो कि अत्यंत फायदेमंद खेती मानी जाती है। तोरई की खेती को व्यावसायिक फसल भी कहा जाता है। किसान भाई यदि इसकी वैज्ञानिक तरीके से खेती करें तो इसकी फसल से उनको अच्छी उपज हांसिल हो सकती है। परिणामस्वरूप आमदनी भी शानदार प्राप्त की जा सकती हैं। तोरई की खेती भारतभर में की जाती है। वहीं, महाराष्ट्र में 1147 हेक्टेयर क्षेत्र में इसकी खेती की जाती हैं। इसकी खेती ग्रीष्म और वर्षा खरीफ दोनों ऋतुओं में की जाती हैं। इसकी खेती को नगदी के रूप में व्यावसायिक फसल के रूप में किया जाता है। तोरई की सब्जी की भारत में छोटे कस्बों से लेकर बड़े शहरों में खूब मांग है। क्योंकि यह अनेक प्रोटीनों के साथ खाने में भी स्वाि दष्ट होती है। इस सब्जी की बाजारो में हमेशा मांग रहती है।

तोरई की खेती के लिए मौसम और भूमि कैसी होनी चाहिए ?

किसान तोरई की खेती मानसून और गर्मी दोनों सीजन में खेती कर सकते हैं। तोरई को ठंड के समय में भी ज्यादा उगाया जाता है। तोरई की रोपण उचित जल निकासी वाली भारी मध्यम मृदा में किया जाना चाहिए। तोरई की शानदार फसल के लिए कार्बनिक पदार्थो से युक्त उपजाऊ मध्यम और भारी मृदा उपयुक्त मानी जाती है, जिसमें जल निकासी की भी बेहतर व्यवस्था होनी चाहिए।

तोरई की 2 उन्नत किस्म

पूसा नस्दार रू इस किस्म के फल एक जैसे लंबे एवं हरे रंग के होते हैं। यह किस्म 60 दिनों के पश्चात फूलती है। प्रत्येक बेल में 15 से 20 फल लगते हैं। Co–1रू यह एक हल्की किस्म है और फल 60 से 75 सेमी लंबे होते हैं। प्रत्येक बेल 4 से 5 किलो फल उत्पादक होती है।

तोरई के लिए खाद एवं उर्वरक प्रबंधन

तोरई की खेती करने से पूर्व मृदा एवं जल का परीक्षण कृषकों को अवश्य कर लेना चाहिए। मृदा परीक्षण से खेत में पोषक तत्वों की कमी की जानकारी मिलती है। किसान परीक्षण रिपोर्ट के हिसाब से खाद और उर्वरक का इस्तेमाल कर बेहतर उपज हांसिल कर सकते हैं। रोपण के दौरान 20 किग्रा एनध्हे 30 किग्रा पी एवं 30 किग्रा के प्रति हेक्टेयर डालें तथा 20 किग्रा एन की दूसरी खुराक फूल आने के समय डालें। साथ ही, 20 से 30 किलो एन प्रति हेक्टेयर, 25 किलो पी और 25 किलो के रोपण के समय डालें। 25 से 30 किग्रा एन की दूसरी किश्त 1 माह के बाद देनी होगी।

तोरई की फसल को कीटों से बचाने का क्या उपाय है ?

तोरई की फसल विशेष तोर पर केवड़ा और भूरी रोगों से प्रभावित होती हैं। तोरई फसल को रोगों से बचाने और बेहतरीन उपज पाने के लिए लिए इसके बीजों को बुवाई से पहले थाइरम नामक फंफूदनाशक 2 ग्राम दवा प्रति किलोग्राम बीज दर से उपचारित करना चाहिए। 1 लीटर पानी का छिड़काव करें और केवड़ा के नियंत्रण के लिए डायथीन जेड 78 हेक्टेयर में 10 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी का छिड़काव करें।

मई–जून में करें इस बैगन की खेती मिलेगा कम समय में मोटा मुनाफा

रबी सीजन की गेंहू आदि फसलों की कटाई का समय चल रहा है। किसान अब इसके बाद जायद की विभिन्न प्रकार की फसलों की बुवाई की तैयारी में जुटेंगे। इसलिए आज हम इस सीजन में की जाने वाली बैगन की खेती की जानकारी प्रदान करेंगे।

भारत में अधिकांश किसान भाई केवल नीले, गुलाबी और हरे रंग के बैगनों को ही जानते हैं । परंतु, क्या आपने कभी दूध की भांति श्वेत यानी सफेद बैगन के विषय में भी सुना है। सफेद बैंगन दिखने में पूर्णतय अंडे जैसा नजर आता है। वर्तमान में इस बैगन की बाजार में मांग बढ़ रही है। भारत के अतिरिक्त विदेशों में भी सफेद बैंगन की मांग में काफी उछाल आ रहा है। बैंगन की यह एक ऐसी किस्म है, जिसकी खेती करके किसान भाई बंपर कमाई कर सकते हैं। किसान भाई इसका हर मौसम में सालभर उत्पादन कर सकते हैं।

सफेद बैगन की खेती से कम समय में मोटी आय

बैंगन की इस किस्म की खेती के लिए सबसे बेहतरीन वक्त फरवरी और मार्च को माना जाता है। किसान फरवरी के समापन से लेकर मार्च की शुरुआत तक इसकी बुवाई कर सकते हैं। हालांकि, भारत के अंदर बहुत सारे ऐसे इलाके भी हैं, जहां सफेद बैंगन की बुवाई दिसंबर माह में की जाती है। जून–जुलाई के महीनों में सफेद बैंगन पूर्ण रूप से तैयार हो जाते हैं। इनको आसानी से बाजार में बेचकर मुनाफा कमाया जा सकता है। किसानों के लिए कम समय में अधिक आमदनी के लिए सफेद बैंगन की खेती एक शानदार विकल्प है।

किसान भाई इस तरह करें सफेद बैंगन की बुवाई

बैंगन की इस प्रजाति की बुवाई करने से पूर्व आपको क्यारी तैयार कर लेनी चाहिए। आपको तकरीबन डेढ़ मीटर लंबी और 3 मीटर चौड़ी क्यारी को बनाकर तैयार कर लेना चाहिए। इसके बाद आपको मिट्टी को भुरभुरा कर लेना है। अब आपको हर एक क्यारी में तकरीबन 200 से 250 ग्राम डीएपी को डाल देना है। क्यारी में डीएपी डालने के पश्चात एक कतार खींचकर इसमें सफेद बैंगन के बीजों की बुवाई करनी है। इसके बाद कुछ ही दिनों में आपको पौधे निकलते हुए नजर आने लगेंगे।

बैगन का सर्वाधिक उत्पादन कहाँ होता है ?

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि भारत में सफेद बैंगन की खेती उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और बिहार जैसे बहुत सारे राज्यों में की जाती है। परंतु, इसकी सर्वाधिक खेती जम्मू में देखने को मिलती है। भारत के भिन्न–भिन्न राज्यों में सफेद बैंगन की खेती के लिए अधिकाँश किसान जम्मू से ही बीज लाकर इसकी खेती करते हैं। जम्मू के अतिरिक्त देश के बाकी राज्यों में सफेद बैंगन की खेती काफी कम होती है। बतादें, कि बैगनी या काले रंग के बैंगने से ज्यादा पौष्टिक तत्व सफेद बैंगन में विघमान होते हैं। बाजारों में इसकी काफी मांग बढ़ने के पीछे लगता है यही कारण है।

मई में भिंडी की फसल उगाकर किसान बेहतरीन आय कर सकते हैं

खरीफ फसल चक्र के दौरान किसान अनाज और बाग. वानी फसलों की खेती की तैयारियां कर रहे हैं। बहुत सारे बागों और सब्जियों की खेती के लिये हर तरह की तैयारी हो चुकी है।

बहुत सारे किसान इस मौसम में भिंडी की फसल भी लगा रहे हैं। भिंडी की फसल से अच्छी पैदावार पाने के लिये आवश्यक है, कि उन्नत किस्म के बीजों का चुनाव, अच्छी सिंचाई व्यवस्था, खाद–उर्वरकों का उपयोग और फसल की देखभाल ठीक तरह से की जाये। इन समस्त कार्यों के साथ भिंडी की खेती के लिये उस तकनीक का उपयोग करें, जिससे कम लागत में ही ज्यादा उत्पादन लिया जा सके।

भिंडी की फसल के लिए खेत की तैयारी ?

भिंडी की खेती गर्मी और सर्दी दोनों ही मौसम में की जाती है। इसलिए जल निकासी वाली दोमट मृदा का चयन करें। सबसे पहले खेत में गहरी जुताई का काम कर लें। दो–तीन जुताई के बाद मिट्टी को पाटा लगाकर समतल कर लें। इसके बाद खेत में गोबर की कंपोस्ट खाद डालकर मिट्टी को पोषण प्रदान करें।

किसान भाई भिंडी की बुवाई कैसे करें ?

किसी भी फसल के अच्छी उपज के लिए बीज की अहम भूमिका होती है। इसलिए किसान भाई भिंडी की बुवाई के लिए उन्नत किस्म के बीजों का ही चयन करें और बीजोपचार का कार्य भी करें। बुवाई के दौरान कतार से कतार की दूरी कम से कम 40 से 45 सेमी. तक ही रखें। यदि खेत उपजाऊ और सिंचित है तो एक हैक्टेयर भूमि के लिये 2.5 से 3 किग्रा. बीजदर और असिंचित भूमि में 5 से 7 किग्रा बीजों के साथ बुवाई का कार्य करें। भिंडी की खेती के लिये नर्सरी तैयार करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इसलिए बीजों को सीधा खेतों में बोयें और हल्की सिंचाई का कार्य करें।

भिंडी की खेती मृदा पोषण प्रबंधन

किसान भाई बेहतरीन पैदावार के लिए फसल और मिट्टी को समयोचित पोषण प्रदान करने का कार्य करें। भिंडी की फसल में पोषण प्रबंधन करने के लिये एक हैक्टेयर खेत में 15–20 टन गोबर की खाद और 80 किग्रा. नाइट्रोजन के साथ 60 किग्रा. पोटाश को मिलाकर खेत में डालें। विशेष ध्यान रखें कि नाइट्रोजन की आधी मात्रा बुवाई से पहले और आधी मात्रा 40 दिन पश्चात खेतों में डालनी चाहिये।

भिंडी में सिंचाई और खरपतवार प्रबंधन

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि आमतौर पर भिंडी वर्षा आधारित फसल है, इसमें अलग से सिंचाई की कोई आवश्यकता नहीं होती। फसल को पोषण और मिट्टी में नमी प्रदान करने के लिये बुवाई के 10–12 दिन बाद सिंचाई जरूर करें। भिंडी की बुवाई के 10–15 दिनों बाद खेतों में खरपतावार उग आते हैं, जो भिंडी के पौधों को बढ़ने से रोकते हैं। इसके लिये समय–समय पर निराई–गुड़ाई करते रहें। खेतों में उगने वाले अनावश्यक पौधे और खरपतवारों को उखाड़कर जमीन में गाड़ देना चाहिये। कीट और बीमारियों की निगरानी करते रहें और इनकी रोकथाम के लिये जैविक कीटनाशकों का ही उपयोग करें।

भिंडी की खेती में आने वाला खर्चा और आय कितनी है ?

सामान्यतः भिंडी की खेती उत्तरप्रदेश, असम, महाराष्ट्र, हरियाणा, राजस्थान, झारखंड, मध्यप्रदेश, गुजरात और पंजाब में की जाती है। यहां के किसान चाहें तो 1 लाख रुपये की लागत के साथ भिंडी की फसल लगाकर 5 लाख रुपये की आय कर सकते हैं। इसकी खेती से किसान को 3–4 लाख तक शुद्ध लाभ मिल जाता है।

ट्रैक्टर की जानकारी के लिए हमारी वेबसाइट
www.merikheti.com पर विजिट करे

लुब्रीयो

ईल्लीयों की रखेगा खबर...
लुब्रीयो की बाज नजर...

DCGL DHARMAJ® CROP GUARD LIMITED | Limitless GROWTH

पडघम

थ्रीप्स एवं जैसिड
जैसे चुसक कीटकों
का खात्मा

मूंग में ज्यादा और
अच्छे उत्पादन के लिए...

ऋजुता

गर्मियों में सबसे ज्यादा मांग में रहने वाले फल से जुड़ी कुछ खास बातें

आम को फलों का राजा भी कहा जाता है। गर्मियों के दिन हों और आम का ख्याल मन में ना आए ऐसा संभव ही नहीं। जी हाँ, सिर्फ भारत ही नहीं पूरे विश्व में आम की ताजगी और स्वाद का परचम लहराता है। इसलिए आज हम आपके लिए एक ऐसे आम की जानकारी लेकर आए हैं, जिस आम को आमों का बादशाह कहा जाता है। भारत के अंदर इस आम की अत्यधिक मांग होती है। अल्फांसो आम को नर्सरी में भी उगाया जा सकता है। लोग इसका कई तरीकों से सेवन करते हैं। कुछ लोग इसका जूस बनाकर पीना पसंद करते हैं, तो कई लोग आइसक्रीम बनाने में भी इसका उपयोग करते हैं। आम की बहुत सारी प्रजातियाँ होती हैं। अल्फांसो आम इन्हीं में एक आम की किस्म है।

आम की बुवाई कब और कैसे करें ?

आम की बुवाई जून माह में करनी सबसे अच्छी होती है। खेत में 4 से 6 इंच वर्षा हो जाने के बाद गड्ढे तैयार कर लें। गड्ढे तैयार करने के बाद आम का रोपण करें। ध्यान रहे कि 15 जुलाई से लेकर 15 अगस्त के मध्य आम का रोपण कभी नहीं करना चाहिए। क्योंकि, यह संपूर्ण वर्षा का मौसम है। इसलिए कृषक भाई सदैव भरपूर वर्षा की अवधि में आम की रोपाई को टालें। अगर पर्याप्त सिंचाई उपलब्ध हों, तो ऐसे में फरवरी मार्च के महीने में आप आम का रोपण कर सकते हैं। यह समय आप की रोपाई के लिए अत्यंत उपयुक्त है।

आम की उन्नत किस्में इस प्रकार हैं ?

आम की किस्मों को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम शीघ्रफलन प्रजाति जो काफी तेजी से विकसित होकर फल देने लायक बनता है। इसके अंतर्गत आम की तोतापुरी, गुलाबखस, लंगड़ा, बॉम्बे ग्रीन, दशहरी और बैगनफली आदि। आम की दूसरी शानदार किस्म मध्यम फलन किस्म है। जैसे मल्लिका, हिमसागर, आम्रपाली, केशर सुंदरजा, अल्फांजो आदि। प्रसंस्करण वाली किस्मों में बैगनफली, अल्फांजो, तोतापरी इत्यादि हैं। आम की तीसरी देर से फलने वाली उन्नत किस्में चौंसा और फजली है। हालांकि इन सभी बेहतरीन किस्मों की अलग अलग विशेषताएं हैं।

आम के फलों की तुड़ाई एवं रखरखाव कैसे करें ?

फलों की तुड़ाई थोड़ा डंठल सहित करें। फलों की तुड़ाई के बाद फलों को अच्छी तरह साफ कर लें। फलों को सदैव हवादार यानी खुले वातावरण में ही रखें। प्लास्टिक की बजाय लकड़ी के बक्से का उपयोग भंडारण के लिए किया जा सकता है।फलों को उसके आकार के मुताबिक अलग. –अलग रखें। उसका ग्रेड बनाएं। आम की तुड़ाई में इस बात का विशेष ध्यान रखें, कि फल कभी धरती पर ना गिरने पाए। हवादार कार्टून में हमेशा भूसे अथवा सुखी पत्तियां डालकर ही आम को बंद करें। इससे उत्पाद खराब नहीं होगा।

आम की खेती पर सब्सिडी कैसे प्राप्त करें ?

केंद्र सरकार और राज्य सरकार आम की खेती के लिए ही नहीं विभिन्न बागवानी उत्पादों की खेती जैसे फल–फूल सब्जियों आदि के लिए व्यापक अनुदान प्रदान करती है। बागवानी पर किसानों को 50 से 80% प्रतिशत तक की अनुदान दिया जाता है। बागवानी पर मिलने वाली सब्सिड़ी की परस्पर जानकारी के लिए मेरीखेती से जुड़े रहें। यहां कृषकों से जुड़ी समस्त अनुदानित योजनाओं को कवर किया जाता है। बागवानी की अनुदान से संबंधित राज्य सरकार एवं केंद्र सरकार की योजनाओं को कवर किया गया है।

बागवानी के लिए लोन कैसे प्राप्त करें ?

बागवानी के लिए ऋण के प्रावधान केवल केंद्र सरकार ने ही नहीं बल्कि भिन्न–भिन्न राज्य सरकारें भी बागवानी को बढ़ावा देने के लिए किसानों को कर्जा प्रदान कर रही है। बैंक से बागवानी के लिए काफी सस्ते दर पर ऋण उपलब्ध करवाया जाता है। साथ ही, कृषकों को ब्याज पर छूट भी प्रदान की जाती है।

बड़ा मुनाफा दिलाने वाले अदरक की खेती से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी

अदरक का उपयोग खांसी–जुकाम में घरेलू नुस्खे के तोर पर भी खूब किया जाता है। बहुत सारी औषधियां बनाने में भी इसका उपयोग किया जाता है। चाय के शौकीनों को तो इसके बिना चाय भाती भी नहीं है। ऐसे में इसकी खेती कर आप सदैव फायदे में ही रहेंगे।

यदि आप एक किसान हैं और मोटी कमाई करना चाहते हैं, तो यह लेख आपके लिए काफी फायदेमंद साबित होगा। क्योंकि, हम आपको आज ऐसी फसल के बारे में बताएंगे जिसकी वर्षभर मांग बनी रहती है। आज हम आपको अदरक की खेती के बारे बताएंगे, जो आपके लिए काफी मुनाफे का सौदा साबित हो सकती है। सर्दियों में खूब उपयोग होने वाले अदरक की मांग सालभर बनी रहती है। अदरक खाने का स्वाद बढ़ाने के साथ ही विभिन्न रोगों को ठीक करने के लिए रामबाण औषधी है। ऐसे में आप अदरक की खेती (Ginger Farming) करेंगे तो आपको कोई घाटा नहीं होगा।

अदरक की खेती कब और कैसे की जाती है ?

वर्षा ऋतु प्रारंभ होने से पहले अदरक की बुवाई की जाती है। अदरक की खेती का सबसे उपयुक्त समय जुलाई–अगस्त का होता है। पहले खेत को दो से तीन बार जुताई करके मृदा को भुरभुरा बनाना आवश्यक है। खेत में भरपूर मात्रा में गोबर की खाद या वर्मी कंपोस्ट डालनी आवश्यक है। अदरक की खेती में इस बात का ध्यान रखना बेहद जरूरी है, कि जहां इसकी खेती की जा रही हो उस खेत में पानी नहीं रुकना चाहिए। एक हेक्टेयर में अदरक की खेती के लिए आपको लगभग 2.5 से 3 टन तक बीजों की आवश्यकता पड़ेगी। अदरक की खेती में सिंचाई के लिए ड्रिप सिस्टम का इस्तेमाल करें। इससे सिंचाई करना काफी आसान होता है। साथ ही, फसल को ड्रिप के साथ उर्वरक भी मिलाकर सहजता से पहुंचाया जा सकता है।

किसान भाई अदरक की कटाई कब करें ?

आमतौर पर ज्यादातर फसलें ऐसी होती हैं, जिन्हें एक तय समय के बाद हार्वेस्ट करना जरूरी हो जाता है। लेकिन, अदरक की खेती में एक बड़ा फायदा है। क्योंकि, इसमें ऐसा कुछ नहीं है। हालांकि, अदरक की फसल 9–10 महीने में पहली बार कटाई के लिए तैयार हो जाती है। लेकिन, यह आपके ऊपर निर्भर करता है, कि आप इसकी कटाई कब करना चाहते हैं। अगर आपको बाजार में उचित भाव ना प्राप्त हो तो आप अपनी फसल को दीर्घकाल तक भी खेत में छोड़ सकते हैं। बतादें, कि अदरक की फसल को 18 महीनों तक बगैर हार्वेस्टिंग के खेत में रखा जा सकता है। अब ऐसे में जब आपको बाजार में अच्छी कीमत मिले तब आप अपनी फसल की कटाई कर सकते हैं। इससे आपको काफी तगड़ा मुनाफा होना निश्चित है।

अदरक की खेती से किसान कितना मुनाफा कमा सकते हैं ?

अदरक की खेती में एक हेक्टेयर में आपकी लागत 8–10 लाख रुपये तक आ सकती है। साथ ही, इससे तकरीबन 50 टन तक उपज निकलती है। मार्केट में अदरक का भाव 80–100 रुपये किलो तक हो जाता है। यदि अदरक की कीमत औसतन 40 से 50 रुपये किलोग्राम हो, तब भी आप 50 टन अदरक से 20–25 लाख रुपये बेहद ही आसानी से कमा सकते हैं।

अगर उत्पादन में आए खर्च को हटा दिया जाए तो आपको एक हेक्टेयर से ही 10–15 लाख रुपये तक का शानदार लाभ प्राप्त हो सकता है। अदरक का उपयोग बहुत सारी दवा और औष. धियों को बनाने में किया जाता है। ऐसे में यदि आप किसी कंपनी से कॉन्ट्रैक्ट करके अदरक की खेती करते हैं, तो इससे और भी अधिक लाभ कमाएंगे। साथ ही आपको फसल बेचने के लिए परेशान भी नहीं होना पड़ेगा।

चुकंदर की खेती के लिए भूमि प्रबंधन, उन्नत किस्में व मृदा और जलवायु

भारत के अंदर अधिकतर लोग चुकंदर खाना काफी पसंद करते हैं। किसी को चुकंदर सलाद के रूप में तो किसी को जूस के रूप में चुकंदर काफी अच्छा लगता है। हालांकि, बहुत सारे लोग इसका जूस पीना भी काफी पसंद करते हैं। बतादें, कि चुकंदर में पोटेशियम, विटामिन सी, फोलेट, विटामिन बी9, मैंगनीज और मैग्नीशियम भरपूर मात्रा में पाया जाता है। इसका सेवन करने से शरीर में रक्त की कमी नहीं होती है। यही कारण है, कि इसकी बाजार में मांग सदैव बरकरार बनी रहती है। अब ऐसे में यदि किसान भाई चुकंदर की खेती करते हैं, तो उनको एक शानदार और अच्छी कमाई आसानी से प्राप्त हो सकती है।

मुख्य बात यह है, कि चुकंदर औषधीय गुणों से भरपूर होता है। इस वजह से इसका उपयोग विभिन्न प्रकार के रोगों के उपचार में भी किया जाता है। साथ ही, इससे बहुत प्रकार की आयुर्वेदिक औषधियां भी तैयार की जाती हैं। बाजार में इसका भाव हमेशा 30 से 40 रुपये किलो तक रहता है।

अब ऐसी स्थिति में यदि किसान भाई चुकंदर की खेती करने की योजना बना रहे हैं, तो उनके लिए यह काफी अच्छी खबर है। यदि वैज्ञानिक विधि के माध्यम से चुकंदर की खेती की जाए, तो किसानों को बंपर पैदावार मिलेगी

चुकंदर की सबसे लोकप्रिय व उन्नत किस्में कौन–सी हैं ?

बलुई दोमट मृदा में चुकंदर की खेती करने पर काफी बेहतरीन उपज मिलती है। इसकी खेती के लिए मृदा का पीएच मान 6 से 7 के मध्य उचित माना गया है। वहीं, गर्मी, बारिश और सर्दी किसी भी मौसम में इसकी आसानी से खेती की जा सकती है। यदि किसान भाई गर्मी के मौसम में चुकंदर की खेती करने की योजना बना रहे हैं, तो सर्वप्रथम अच्छी और बेहतरीन किस्मों का चयन करें। अर्ली वंडर, मिस्त्र की क्रॉस्बी, डेट्रॉइट डार्क रेड, क्रिमसन ग्लोब, रूबी रानी, रोमनस्काया और एमएसएच 102 चुकंदर की सबसे लोकप्रिय किस्में हैं। इन किस्मों की खेती करने पर किसान को बंपर पैदावार हांसिल होती है।

चुकंदर की बुवाई एवं भूमि प्रबंधन इस तरह करें

चुकंदर की बुवाई करने से पूर्व खेत की कई बार जुताई की जाती है। उसके बाद 4 टन प्रति एकड़ की दर से खेत में गोबर की खाद डालें और पाटा लगाकर जमीन को एकसार कर दें। अब इसके बाद क्यारी बनाकर चुकंदर की बुवाई करें। विशेष बात यह है, कि छिटकवां और मेड़ विधि से चकुंदर की बुवाई की जाती है। अगर आप छिटकवां विधि से चुकंदर की बुवाई कर रहे हैं, तो आपको एक एकड़ में 4 किलो बीज की आवश्यकता पड़ेगी। वहीं, यदि आप मेड़ विधि से बुवाई करते हैं तो किसान को कम बीज की आवश्यकता पड़ती है। मेड़ विधि में पहले 10 इंच ऊंची मेड़ बनाई जाती है। अब इसके बाद मेड़ पर 3–3 इंच की दूर पर बीजों को बोया जाता है।

बुवाई के कितने दिन बाद फसल पूर्णतय तैयार हो जाती है ?

बतादें, कि चुकंदर एक कंदवर्गीय श्रेणी में आने वाली फसल है। इसलिए समय–समय पर इसकी निराई– गुड़ाई की जाती है। साथ ही, आवश्यकता के अनुरूप सिंचाई भी करनी पड़ती है। बुवाई करने के 120 दिन पश्चात फसल पककर तैयार हो जाती है। अगर आपने एक हेक्टेयर में खेती कर रखी है, तो 300 क्विंटल तक उपज मिलेगी। यदि 30 रुपये किलो के हिसाब से चुकंदर बेचते हैं, तो इससे आसानी से लाखों रुपये की आय होगी।

India's First

Gear Shift Rotavator

Multi Speed Gearbox
with Lever Mechanism
to change the Rotor RPM

GOLD

FIELDKING

बागवानी: मौसमी आधार पर फूलों की खेती से जुड़ी अहम जानकारी

आजकल भाग–दौड़ भरी जिंदगी में लोग अपने बाग बगीचों में अलग अलग तरह के फूलों को उगाकर मानसिक सुकून हांसिल कर सकते हैं। आज हम आपको मौसमिक आधार पर कुछ विशेष फूलों की जानकारी प्रदान करेंगे। आप इन पौधों को गमलों, बरामदों, टोकरियों और खिड़कियों में बड़ी ही आसानी से उगा सकते हैं।

सालाना या मौसमी फूल वाले पौधे उन्हें कहा जाता है, जो अपना जीवन चक्र एक वर्षा या एक मौसम में पूर्ण कर लेते हैं।

फूलों के पौध तैयार करने की विधि

मौसमी फूलों के पौधे अलग अलग तरह से तैयार किये जाते हैं। दरअसल, कुछ फूलों के पौधों को पहले पौधशाला में तैयार करने के पश्चात क्यारियों में लगायें। इसके उपरांत विभिन्न प्रकार की प्रजातियों के बीज सीधे क्यारियों में लगा दिये जाते हैं। इनके बीज काफी छोटे होते हैं। इनकी सही तरीके से बेहतर देखभाल करके पौध को तैयार कर लिया जाता है।

मृदा चयन एवं तैयारी

किसान भाई इस तरह की जमीन का चुनाव करें, जिसमें पर्याप्त मात्रा में जीवांश हों, सिंचाई और जल निकासी की अच्छी सुविधाएं उपलब्ध हों। फूलों की खेती के लिये रेतीली दोमट मृदा सबसे उपयुक्त मानी जाती है। जमीन को तकरीबन 30 सेमी की गहराई तक खोदें, गोबर की खाद, उर्वरक, आकार के अनुरूप मिश्रित करें। (1000 वर्ग मीटर क्षेत्र में 25–30 क्विंटल गोबर की खाद) वर्षा ऋतु में पौधशाला की देखभाल अन्य मौसमों की अपेक्षा में ज्यादा करें।

बीज की बुवाई और रोपाई

क्यारियों को आकार के मुताबिक एकसार करके 5 सेमी के फासले पर गहरी पंक्तियाँ निर्मित करके उनमें 1 सेमी की दूरी पर बीज रोपण करें। बीज बुवाई के दौरान इस बात का विशेष ख्याल रखें कि बीज एक सेमी से ज्यादा गहरा ना हो पाए। इसके बाद में इसको हल्की परत से ढकें। सुबह शाम हजारे से पानी दें। जब पौध तकरीबन 15 सेमी ऊँची हो जाए तब रोपाई करें।

क्यारियों में रोपाई एक निश्चित दूरी पर ही करें। सबसे आगे बौने पौधे 30 सेमी तक ऊँचाई वाले 15–30 सेमी दूरी पर, मध्यम ऊँचाई 30 से 75 सेमी वाले पौधे, 35 सेमी से 45 सेमी तथा लंबे 75 सेमी से ज्यादा ऊँचाई रखने वाले पौधे 45 सेमी से 50 सेमी के फासले पर रोपाई करें।

फूलों की देखरेख से जुड़े बिंदु

सिंचाई: वर्षा ऋतु में सिंचाई की अधिक जरूरत नहीं पड़ती है। अगर काफी वक्त तक वर्षा ना हो तो उस स्थिति में जरूरत के अनुरूप सिंचाई करें। शरद ऋतु में 7–10 दिन एवं ग्रीष्म ऋतु में 4–5 दिन के समयांतराल पर सिंचाई करें।

खरपतवा: नियंत्रणरू खरपतवार जमीन से नमी और पोषक तत्व ग्रहण करते रहते हैं, जिसके चलते पौधों के विकास तथा बढ़ोतरी दोनों पर प्रतिकूल असर पड़ता है। अर्थात उनकी रोकथाम के लिए खुरपी की मदद से घास–फूस निकालते रहें।

खाद एवं उर्वरक: पोषक तत्वों की उचित मात्रा, भूमि, जलवायु और पौधों की प्रजाति पर निर्भर करता है। आम तौर पर यूरिया– 100 किलोग्राम, सिंगल सुपरफॉस्फेट 200 किलो ग्राम एवं म्यूरेट ऑफ पोटाश 75 किलोग्राम का मिश्रण बनाकर 10 किलोग्राम प्रति 1000 वर्ग मीटर की दर से जमीन में मिला दें। उर्वरक देने के दौरान ख्याल रखें कि जमीन में पर्याप्त नमी हो।

तरल खाद: मौसमी फूलों की सही और बेहतर बढ़वार फूलों के बेहतरीन उत्पादन के लिये तरल खाद अत्यंत उपयोगी मानी गयी है। गोबर की खाद और पानी का मिश्रण उसमें थोड़ी मात्रा में नाइट्रोजन वाला उर्वरक मिलाकर देने से फायदा होता है ।

जलवायु एवं मौसमिक आधार पर फूलों का विभा. जन

वर्षा कालीन मौसमी फूल

इन पौधों के बीजों की अप्रैल–मई में पौधशाला में बोवाई करें और जून–जुलाई में इसकी पौध को क्यारियों या गमलों में लगायें। मुख्य रूप से डहेलिया, वॉलसम, जीनिया, वरबीना आदि के पौध रोपित करें।

शरद कालीन मौसमी फूल

इन पौधों के बीजों को अगस्त–सितम्बर माह में पौधशाला में बोयें एवं अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में गमलों या क्यारियों के अंतर्गत रोपाई करें। इन पर फूल लगना करीब फरवरी–मार्च में शुरू होते हैं। प्रमुख रूप से स्वीट सुल्तान, वार्षिक
गुलदाउदी, क्लार्किया, कारनेशन, लूपिन, स्टाक, पिटुनिया, फ्लॉक्स, वरवीना, पैंजी, एस्टर और कार्नफ्लावर आदि के पौधे लगायें ।

ग्रीष्म कालीन मौसमी फूल

इन पौधों के बीज जनवरी में बोयें तथा फरवरी में लगायें इन पर अप्रैल से जून तक फूल रहते हैं। मुख्य रूप से जीनिया, कोचिया, ग्रोमफ्रीना, एस्टर, गैलार्डिया, वार्षिक गुलदाउदी लगायें।

बीज इकठ्ठा करना

बीज के लिए फल चुनते समय फूल का आकार, फूल का रंग, फूल की सेहत अच्छी ही चुननी चाहिये। जब फूल पक कर मुरझा जायें तब उसे सावधानी से काट कर धूप में सुखा लें फिर सावधानी से मलकर उनके बीज निकाल लें और फिर उन्हें शीशे के बर्तन या पॉलीथिन की थैली में बंद कर लें।

मौसमी फूलों के प्रमुख पौधे इस प्रकार हैं

बाड़ के लिये पौधे: गुलदाउदी, गेंदा।

गमले में लगाने हेतु: गेंदा, कार्नेशन, वरवीना, जीनिया, पैंजी आदि ।

पट्टी, सड़क या रास्ते पर लगाने हेतु: पिटुनिया, डहेलिया, केंडी टफ्ट आदि ।

सुगंध के लिये पौधे: स्वीट पी, स्वीट सुल्तान, पिटुनिया, स्टॉक, वरबीना, बॉल फ्लॉक्स ।

क्यारियों में लगाने हेतु: एस्टर, वरवीना, फ्लॉस्क, सालविया, पैंजी, स्वीट विलयम, जीनिया।

शैल उद्यानों में लगाने हेतु: अजरेटम, लाइनेरिया, वरबीना, डाइमार्फोतिका, स्वीट एलाइसम आदि ।

लटकाने वाली टोकरियों में लगाने हेतु: स्वीट, लाइसम, वरवीना, पिटुनिया, नस्टरशियम, पोर्तुलाका, टोरोन्सिया।

NAYA
SWARAJ,
MERA
SWARAJ
SWARAJ 744 FE
SWARAJ 855 FE

B-A-U ने कम ईंधन व जल खपत में सिंचाई करने वाली अद्भुत मशीन तैयार की

भारत एक कृषि समृद्ध देश है। यहां बड़े स्तर पर लोग खेती किसानी पर निर्भर हैं। सामान्य तोर पर कृषि एक कठोर परिश्रम वाला कार्य है। किसान भाइयों को फसल प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत की कसौटी पर खरा उतरना पड़ता है। कृषि में श्रम, समय और धन का खर्चा तीनों की खपत होती है। भारत में खेती के लिए आधुनिक उपकरणों की स्वीक. ार्यता काफी बढ़ने से किसानों के लिए खेती करना आज के समय में बेहद सुगम हो गया है। परंतु, आज भी बहुत सारे किसानों के लिए खेत की सिंचाई करना एक बड़ी समस्या बना हुआ है। खेत की सिंचाई करने के लिए कृषकों को मजदूर तथा मोटी धनराशि खर्च करनी पड़ती है।

किसानों की इस कठिनाई को सहज बनाने के लिए रांची की बिरसा एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी ने एक यंत्र का निर्माण किया है, जिसकी सहायता से किसान एक जगह पर खड़े रहते हुए भी पांच एकड़ खेत की सिंचाई कर सकते हैं।

अब मशीन से 5 एकड़ खेत की एकसार सिंचाई आसान

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय ने वाटर स्प्रिंकलर मशीन को विकसित किया है, जिसके सहयोग से किसान मात्र 1 घंटे में एक जगह पर खड़े होकर 5 एकड़ खेत की बड़ी सहजता से सिंचाई कर सकते हैं। इस मशीन के साथ किसानों के लिए खेतों की सिंचाई बेहद सहज हो जाएगी। साथ ही, इससे खेती में आने वाले खर्चा में भी कमी देखने को मिल पाएगी।

मशीन कितना तेल प्रति घंटा खपत करेगी

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय ने इस मशीन के अंदर कंप्रेसर मोटर लगाई है, जिससे 125 हॉर्स पावर जनरेट होती है। इस मशीन में एक टंकी उपलब्ध कराई गई है, जिसमें 20 लीटर तक पानी को भरा जा सकता है। इस मशीन का इंजन डीजल के द्वारा चलता है और इसके साथ किसान 1 लीटर डीजल में 1 घंटे तक सुगमता से सिंचाई कर सकते हैं। विश्वविद्यालय ने इस मशीन में 100 फीट लंबा पाइप प्रदान किया है और इसके अंतिम छोर पर स्प्रिंकल मशीन है। इस मशीन से पानी एक साथ एक ही स्थान पर नहीं गिरता है और पानी बारिश की भांति बूंद–बूंद होकर एक बराबर खेत में जाता है, जिससे पानी की बर्बादी नहीं होती। साथ ही, खेतों की सिंचाई काफी सही–तरीके से हो जाती है।

मशीन से कितनी दूरी तक पहुंचेगा पानी

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इस मशीन से पानी एक पाइप के माध्यम से काफी अच्छे प्रेशर के साथ निकलता है, जिससे किसान एक जगह खड़े होकर भी सुगमता से 200 मीटर तक पानी को पहुंचा सकते हैं। लंबा पाइप होने से आप पीछे होकर भी पानी को खेत में बड़ी सहजता से पहुंचा सकते हैं। इस मशीन की ज्यादा हॉर्स पावर होने से पानी तीव्र गति से खेतों तक पहुंचता है।

नवीन वाटर स्प्रिंकलर मशीन की कीमत की जानकारी

बिरसा एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी ने वाटर स्प्रिंकलर मशीन की कीमत 01 लाख रुपये निर्धारित की गई है। छोटे एवं सीमांत किसानों के लिए इतना पैसा एक दम से लगाना काफी कठिन हो सकता है। परंतु, 5–6 किसान इस मशीन को एक साथ मिलकर भी खरीद सकते हैं। किसान इस मशीन को खरीदने के लिए बिरसा कृषि विश्वविद्यालय को ऑर्डर दे सकते हैं।

भारत में बिकने वाले 5 सबसे लोकप्रिय और अच्छे ट्रैक्टर कौन–कौन से हैं ?

खेती से जुड़े अधिकांश कामों में ट्रैक्टर का उपयोग किया जाता है। कृषि यंत्रों में ट्रैक्टर सबसे अहम उपकरण है। वर्तमान में खेती और बागवानी के लिए ट्रैक्टर अपनी अहम भूमिका निभा रहे हैं। क्योंकि, ट्रैक्टर की मदद से कम समय और श्रम में खेती–किसानी के कार्यों को समय से पूरा किया जा सकता है। वहीं, इसके कृषि में उपयोग से फसल के खर्चा में कमी आती है। ट्रैक्टर के साथ जोड़कर विभिन्न प्रकार के कृषि उपकरण जैसे– रोटावेटर, कल्टीवेटर, ट्रैक्टर ट्रेलर, हैरो, मल्चरआ. दि संचालित किए जाते हैं। ट्रैक्टर खेत की जुताई से लगाकर मंडी में फसल ले जाने तक के काम में आता है। ऐसे में हर किसान चाहता है, कि उसके पास ट्रैक्टर होना चाहिए। अगर आप भी अपने खेती–किसानी के कार्यों के लिए एक सर्वश्रेष्ठ ट्रैक्टर की खोज कर रहे हैं तो आज हम आपकी तलाश को खत्म करने की जानकारी देंगे। जी हाँ, आज हम आपके लिए कुछ चुनिंदा और सबसे अच्छे ट्रैक्टरों की जानकरी लेकर आए हैं।

5 सबसे लोकप्रिय ट्रैक्टर

1. महिंद्रा अर्जुन नोवो 605 Di&i 2 डब्ल्यूडी

MAHINDRA ARJUN NOVO 605 Di&i 2 WD ट्रैक्टर 2 व्हील ड्राइव और 4 व्हील ड्राइव दोनों विकल्प के साथ उपलब्ध होता है। इसको आप अपनी आवश्यकता के अनुरूप चुन सकते हैं। यह ट्रैक्टर 4 सिलेंडरों के साथ आता है। यह एक ट्रैक्टर 57 एचपी ट्रैक्टर है जो 2100 आरपीएम उत्पन्न करता है। इस ट्रैक्टर के 2 व्हील इंजन की क्षमता 3531 सीसी है। यह 4 सिलेंडरों के साथ आता है, जो 2100 इंजन रेटेड आरपीएम जनरेट करता है।

MAHINDRA ARJUN NOVO 605 Di&i 2 WD ट्रैक्टर में 15 फॉरवर्ड और 3 रिवर्स गियर बॉक्स आते हैं। महिंद्रा अर्जुन नोवो 605 क्प–प 2 डब्ल्यूडी में ड्यूटी डायाफ्राम टाइप का क्लच आता है जो कार्य को सुचा: व आसान तरीके से करता है। इसमें पावर स्टीयरिंग है। इस ट्रैक्टर में मल्टी प्लेट तेल में डूबे हुए ब्रेक दिए गए हैं जो कार्य के दौरान फिसलन को कम करते हैं। इस ट्रैक्टर के 2 व्हील ड्राइव ट्रैक्टर में 2200 किलोग्राम तक वजन उठाने की मजबूत क्षमता है।

2. स्वराज 744 एफई ट्रैक्टर

SWARAJ 744 FE ट्रैक्टर अग्रिम तकनीक से युक्त ट्रैक्टर है, जो खेत में काफी बेहतरीन कार्य करता है। यह एक 48 एचपी ट्रैक्टर है, जो तीन सिलेंडरों के साथ आता है। SWARAJ 744 FE ट्रैक्टर में 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियरबॉक्स आते हैं। इसमें ड्राई डिस्क टाइप ब्रेक अथवा तेल में डूबे हुए ब्रेक भी आते हैं। इसमें 12वी 88एच की बैटरी प्रदान की गई है। यह ट्रैक्टर सिंगल ड्रॉप आर्म स्टीयरिंग कॉलम के साथ मैकेनिकल या पावर स्टीयरिंग के साथ आता है। इस ट्रैक्टर में 3136 सीसी का शक्तिशाली इंजन उपलब्ध कराया गया है, जो 2000 रेटेड आरपीएम उत्पन्न करता है। इसकी पीटीओ पॉवर 41.8 है। खेत में दीर्घ समय तक निरंतर कार्य करने के लिए इस ट्रैक्टर में 60 लीटर का बड़ा फ्यूल टैंक दिया गया है।

3. मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई महा शक्ति ट्रैक्टर

MESSEY FERGUSON 241 DI महा शक्ति ट्रैक्टर में बहुत शानदार फीचर्स प्रदान किए हैं। इसका डिजाइन भी काफी आकर्षक है। ये आपकी कृषि संबंधी हर आवश्यकता को पूर्ण कर सकता है।

MESSEY FERGUSON 241 DI महा शक्ति ट्रैक्टर 1500 इंजन रेटेड आरपीएम जनरेट करता है। यह ड्यूल क्लच के साथ आता है। इसमें मल्टी डिस्क टाइप के तेल में डूबे ब्रेक आते हैं। इसमें 8 फारवर्ड और 2 रिवर्स गियर या 10 फारवर्ड व 2 रिवर्स गियर बॉक्स है। इस ट्रैक्टर में स्लाइडिंग मेश या पार्टिअल कांस्टेंट मेश टाइप का ट्रांसमिशन दिया गया है। इसमें मैकेनिकल या पावर स्टीयरिंग है। इस ट्रैक्टर में 1700 किलोग्राम तक वजन उठाने की मजबूत क्षमता है। इसमें 47 लीटर का बड़ा फ्यूल टैंक आता है।

4. जॉन डियर 5105 ट्रैक्टर

JOHN DEERE 5105, 40 एचपी में सबसे शानदार मॉडल है। इसका आकर्षक डिजाइन और मजबूत बॉडी किसानों को आकर्षित करती है। इसलिए यह ट्रैक्टर किसानों के बीच काफी लोकप्रिय है। यह ट्रैक्टर 3 सिलेंडरों साथ आता है जो 2100 इंजन रेटेड आरपीएम जनरेट करता है। यह ट्रैक्टर एडवांस तकनीक से लैस है। इसमें सिंगल और ड्यूल क्लच का विकल्प आता है। इसमें तेल में डूबे हुए डिस्क ब्रेक हैं, जो कम फिसलते हैं।

JOHN DEERE 5105 ट्रैक्टर में 8 फॉरवर्ड और 4 रिवर्स गियर आते हैं। इस ट्रैक्टर की फॉरवर्ड स्पीड 3.25 से लेकर 35.51 किलोमीटर और इसकी रिवर्स स्पीड 4.27 से लेकर 15.45 किलोमीटर है। इसमें पावर स्टीयरिंग है। इस ट्रैक्टर में 1600 किलोग्राम तक वजन उठाने की मजबूत क्षमता है।

5. पॉवर ट्रैक यूरो 439 ट्रैक्टर

POWERTRAC EURO 439 ट्रैक्टर आकर्षक डिजाइन और एडवांस तकनीक के साथ आता है। यह 42 एचपी ट्रैक्टर है, जिसमें तीन सिलेंडर आते हैं। इस ट्रैक्टर में डायाफ्राम टाइप का क्लच है। इसमें 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर बॉक्स आते हैं। इसकी फॉरवर्ड स्पीड काफी शानदार होती है। इसमें ऑयल इमर्सड़ ब्रेक दिए गए हैं। इसमें पावर या मैन्युअल स्टीयरिंग का विकल्प प्रदान किया गया है, जिसे आप अपनी सुविधा के अनुरूप चुन सकते हैं। लंबे समय तक खेत में काम करने के लिए इसमें 50 लीटर क्षमता का फ्यूल टैंक आता है। यह ट्रैक्टर 1600 किलोग्राम तक वजन आसानी से उठा सकता है।

ऑटोनेक्स्ट कंपनी इलेक्ट्रिक और स्वचालित ट्रैक्टर लांच करने जा रही है

किसान भाइयों को अपनी खेती के कार्यों को समय से पूरा करने के लिए कृषि उपकरणों की आवश्यकता होती है। ट्रैक्टर इन कृषि उपकरणों में से सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ट्रैक्टर को किसानों का सच्चा मित्र भी कहा जाता है। किसानों की लागत में कमी करने के लिए भारत के पहले इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर स्टार्ट–अप में से एक ऑटोनेक्स्ट ऑटोमेशन ने स्वदीप पिलारिसेट्टी के नेतृत्व में एचएनआई के एंजेल निवेश से सीड राउंड फंडिंग में 6.4 करोड़ रुपये की फंडिंग हासिल की है, जो ऑटोनेक्स्ट ऑटोमेशन के बोर्ड सदस्यों में से एक है। फंडिंग राउंड का नेतृत्व कीरेत्सु फोरम, वीर्या मोबिलिटी 5.0 और तेल और गैस पेशेवर अयाद खलील चम्मास जैसे कुछ प्रमुख स्वर्गदूतों ने किया था। बतादें, कि अब ईवी क्षेत्र में एक अंतरराष्ट्रीय निवेशक हैंय चांद दास, आईटीसी के पूर्व सीईओय नितिन जौहर, रास अल खैमा सरकार में आईडीओ के सीएफओय केकेआर कैपस्टोन के भारत प्रमुख सुवीर सिन्हाय रविचंद्रन सरगुनाराज, पूर्व कार्यकारी–निदेशक, टीवीएस लॉजिस्टिक्स सर्विसेज और अन्य।

स्टार्टअप करने वालों का क्या कहना है ?

ऑटोनेक्स्ट ऑटोमेशन का कहना है, कि उसने इस फंडिंग का उपयोग 3 वर्ष के लिए भारत के पहले इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर के अनुसंधान एवं विकास, टूलींग और परीक्षण के लिए किया है।इसके अतिरिक्त उन्होंने ई–ट्रैक्टर के 3 अलग–अलग वेरिएंट भी प्रस्तुत किए और चालू वित्तीय वर्ष में बाजार में ई–ट्रैक्टर के 25HP, 35HP और 45HP वेरिएंट लॉन्च करने की तैयारी कर रहे हैं।

अब यह 27 करोड़ रुपये (+3.5 मिलियन) में अपना प्री–सीरीज ए फंडिंग राउंड शुरू करने पर विचार कर रहा है।

ऑटोनेक्स्ट ट्रैक्टर में क्या खास है ?

AutoNxt ने जमीनी स्तर से अपनी संपूर्ण आपूर्ति श्रृंखला और असेंबली सेटअप का निर्माण किया है। इसके साथ ही, इसने उत्पादन के लिए तैयार हाई टॉर्क इलेक्ट्रिक पावरट्रेन का निर्माण किया है। स्टार्ट–अप का दावा है कि यह बाजार में हाई वोल्टेज सिस्टम वाला एकमात्र स्टार्ट–अप है। इन सभी वर्षों के दौरान, इसने अनुभवी उद्योग पेशेवरों के साथ अपनी टीम को मजबूत किया है। स्टार्ट–अप का कहना है, कि वह एआई और 5जी तकनीक से संचालित ऑटोमेशन स्टैक पर भी सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है, जिसका वे ट्रैक्टरों के विभिन्न उपयोग किए गए मामलों पर परीक्षण कर रहे हैं। कंपनी की योजना 2024 तक अपनी स्वायत्त ड्राइविंग सुविधाओं को जारी करने की है। इससे इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों के लाभ बढ़ेंगे और किसानों को विषम परिस्थितियों में खेत में ट्रैक्टर चलाते समय होने वाली कठिनाइयों में कमी आएगी।

सोनालीका ने वित्त वर्ष24 में अब तक की सर्वाधिक कुल वार्षिक बाजार हिस्सेदारी 15.3% (est.) दर्ज की और घरेलू बाजार में वृद्धि दर्ज करने वाला एकमात्र ट्रैक्टर ब्रांड बना

दमदार प्रदर्शन से भरे एक गौरवशाली वर्ष का समापन करते हुए, सोनालीका ट्रैक्टर्स ने वित्त वर्ष'24 की कठिन परिस्थितियों को पार करते हुए 15.3% (est-) की सर्वाधिक कुल वार्षिक बाजार हिस्सेदारी के साथ वित्त वर्ष'24 में प्रशंसनीय प्रदर्शन किया और घरेलू बाजार में वृद्धि दर्ज करने वाला एकमात्र ट्रैक्टर ब्रांड बन गया है।

भारत से ट्रैक्टर एक्सपोर्ट में नंबर 1 ब्रांड, सोनाली. का ट्रैक्टर्स इनोवेशन की अपनी प्रतिबद्धता को बढ़ावा देने और अपने किसान–केंद्रित दृष्टिकोण का लाभ उठाते हुए एक नई उपलब्धि हासिल की और वित्त वर्ष'24 का समापन करने के लिए उत्सा. हित है। कंपनी ने अब तक की सर्वाधिक कुल वार्षिक बाजार हिस्सेदारी 15.3% (est-) हासिल करने के साथ–साथ वित्त वर्ष 2024 में घरेलू बाजार में बढ़ने वाला एकमात्र ट्रैक्टर ब्रांड बन गया है। इस जबरदस्त उपलब्धि ने सोनालीका को उद्योग के प्रदर्शन से भी बेहतर प्रदर्शन करने में सक्षम बनाया है।

नवीनतम प्रदर्शन से सोनालीका ने भारत से ट्रैक्टर एक्सपोर्ट करने वाली कंपनियों के बीच अजेय 34.4% एक्सपोर्ट बाजार हिस्सेदारी (est-) दर्ज की है। इसमें आश्चर्यजनक 6.2% (est-) बाजार हिस्सेदारी बढ़ोतरी शामिल हैद्य सोनालीका वित्त वर्ष24 की कठिन परिस्थितियों से गुजरते हुए पूरे साल अपने अद्वितीय दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ा –

- होशियारपुर में दो नए प्लांट स्थापित करने के लिए रु 1300 करोड़ निवेश योजना की शुरुवात, जो दुनिया के सबसे बड़े ट्रैक्टर प्लांट के मालिक होने के सोनालीका की स्थिति को और मजबूत करेगा।
- भारत में अपनी तरह के पहले श्आई टी एल ग्लोबल पार्टनर्स समिट (जी पी एस 200)' का आयोजन जहाँ अंतरराष्ट्रीय बाजारों के लिए डिजाइन किए गए श्एस वी सीरीज इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरश सहित 5 नए ट्रैक्टर लॉन्च किए।
- 40–75 HP में प्रीमियम टाइगर श्रृंखला के तहत 10 नए मॉडलों की सबसे बड़ी ट्रैक्टर रेंज लॉन्च किए
- सिकंदर DLX DI 60 टॉर्क प्लस लॉन्च किया जिसमें मिले अपनी श्रेणी का सबसे बड़े इंजन और देश भर में एक ही कीमत पर उपलब्ध कराया
- हैवी ड्यूटी ट्रैक्टर रेंज में 5 साल की ट्रैक्टर की वारंटी उपलब्ध कराई'

वित्त वर्ष'24 के दौरान सोनालीका की यात्रा अपने हैवी–ड्यूटी ट्रैक्टरों और उन्नत उपकरणों के साथ जमीनी स्तर पर किसानों के साथ कंपनी के तालमेल को दर्शाती है। अपने विचार साझा करते हुए, श्री रमन मित्तल, जॉइंट मैनेजिंग डायरेक्टर, इंटरनेशनल ट्रैक्टर्स लिमिटेड, ने कहा, "हम अब तक की सर्वाधिक कुल वार्षिक बाजार हिस्सेदारी 15.3% (est-) के साथ अपनी वित्त वर्ष'24 की यात्रा को पूरा करके रोमांचित हैं।

हम दुनिया के सबसे बड़े ट्रैक्टर बाजार भारत में वृद्धि दर्ज करने वाले एकमात्र ट्रैक्टर ब्रांड बनने और उद्योग के प्रदर्शन से बेहतर प्रदर्शन करके खुश हैं। ट्रैक्टर एक्सपोर्ट में हमने 34.4% (est-) बाजार हिस्सेदारी के साथ भारत से ट्रैक्टर एक्सपोर्ट में नंबर 1 ब्रांड के रूप में अपनी स्थिति को और मजबूत किया है।यह आश्चर्यजनक वृद्धि सोनालीका के प्रीमियम टाइगर रेंज और फ्लैगशिप सिकंदर क्स सीरीज में नए और उन्नत ट्रैक्टरों को लॉन्च करने और हमारी हैवी ड्यूटी ट्रैक्टर रेंज में निरंतर नई तकनीक पेश करने से संभव हुई है। इसके साथ ही, हमारी वेबसाइट पर ट्रैक्टर की कीमतें प्रदर्शित करने के हमारे अनोखे कदम ने ट्रैक्टर खरीद में पारदर्शिता सुनिश्चित की है, जिससे हमारे ब्रांड में सभी का विश्वास लगातार बढ़ा है। यह विशिष्ट दृष्टिकोण हमारे निरंतर विकास का मार्ग भी प्रशस्त कर रहा है। इसके अलावा, भारत से ट्रैक्टर एक्सपोर्ट में हमारा नेतृत्व हमें दुनिया भर में लगातार और आक्रामक तरीके से इंनोवेट करने की शक्ति दे रहा है। इनमें से अधिकांश तकनीक श्मेड इन इंडियाश हैं, इसलिए वे हमें बेहतर भविष्य के लिए तैयार होने में भी मदद कर रहे हैं।ऐसी उत्कृष्ट उपलब्धियां हासिल करके हम एक संगठन और नेटवर्क के रूप में और भी मजबूत हो गए हैं, जिससे वित्त वर्ष 2025 में नए उपलब्धि हासिल करने और अपने श्मिशन 2 लाख' की ओर हम तेजी से बढ़ने के लिए तैयार हैं।

ताकत, किफायत और भरोसे के साथ
प्रीत सुपर ही है
सबसे ऊपर
PREET
SUPER
9049 4WD
PREET
PREET
#BetterFutureIsHere

IMD ने इस मानसून में सामान्य से अधिक वर्षा की संभावना जताई है

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने इस वर्ष के मानसून सीजन का आँकलन जारी किया है। मौसम विभाग के अनुसार, इस वर्ष मानसून सीजन में सामान्य से ज्यादा वर्षा होगी। भारत मौसम विज्ञान विभाग ने मानसून सीजन 2024 को लेकर अपना अनुमान जारी किया है।

आईएमडी ने भविष्यवाणी की है, कि इस बार मानसून सीजन में सामान्य से ज्यादा बरसात होगी। IMD ने सोमवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस कर इस बात की जानकारी साझा की है। आईएमडी का कहना है, कि मॉनसून की बारिश सामान्य से ज्यादा रहने का अनुमान है। यह अनुमान 104% प्रतिशत तक जताया गया है।

अल–नीनो की स्थिति कैसे रहेगी और इसका प्रभाव कैसे कम होगा ?

आईएमडी का कहना है, कि इस वर्ष अल–नीनो की स्थिति मध्यम रहेगी। अल–नीनो धीरे–धीरे कमजोर होगा और मॉनसून की शुरुआत तक न्यूट्रल हो जाएगा। मौसम विभाग के अनुसार, मॉनसून की शुरुआत से ला–नीना सक्रिय हो जाएगा, जो कि अल–नीनो के विपरीत प्रभाव दिखाता है। मौसम विभाग के कहने के अनुसार अल–नीनो के प्रभाव को रोकने में इंडियन डायपोल ओशन (आईओडी) पूरी तरह सक्रिय रहेगा।

सरल शब्दों में कहें तो, पश्चिमी हिंदी महासागर का पूर्वी हिंद महासागर की तुलना में बारी–बारी से गर्म व ठंडा होना ही हिंद महासागर द्विध्रुव यानी (आईओडी) कहलाता है। इससे अच्छी खासी मात्रा में वर्षा देखने को मिलेगी। भारत के कुछ पूर्वी एवं अन्य इलाकों को छोड़कर, इस बार बारिश सामान्य से ज्यादा होने की संभावना है। जानकारी के लिए बतादें, कि शानदार बरसात के लिए आईओडी का पॉजिटिव होना आवश्यक माना जा रहा है। मौसम विभाग ने अग्रिम तौर पर कहा है, कि दक्षिण–पश्चिम के प्रदूषकों के बढ़ने पर आईओडी सक्रिय होगा और इससे बारिश बढ़ेगी।

आईएमडी के अनुसार कितनी बरसात होनी है ?

आईएमडी के अनुसार, इस वर्ष 104 प्रतिशत तक बारिश होने का अनुमान है, जो कि सामान्य से ज्यादा है। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि अगर मानसून में बारिश 90% प्रतिशत से कम हो तो इसे कम बारिश ही माना जाता है। इसी प्रकार 90 से 96% प्रतिशत बारिश सामान्य से कम, 96 से 104 प्रतिशत बारिश को सामान्य, 104 से 110 प्रतिशत बारिश को सामान्य से ज्यादा और 110 से अधिक मॉनसूनी बारिश में दर्ज किया जाता है। मौसम विभाग का कहना है, कि केवल उत्तर–पश्चिम, पूर्व और पूर्वोत्तर भारत के कुछ इलाकों को छोड़ दें तो सब जगह सामान्य से अधिक वर्षा होगी।

सितंबर के महीने में सबसे ज्यादा वर्षा होने की भविष्यवाणी

मौसम विभाग के अनुसार, मॉनसून के मौसम जून से सितंबर के मध्य 106% प्रतिशत वर्षा हो सकती है। यह सामान्य से काफी अधिक है। महीने के अनुरूप इस साल मॉनसून के पहले माह जून में लगभग 95% प्रतिशत वर्षा दर्ज होगी। वहीं, जुलाई के महीने में 105% प्रतिशत बारिश होगी। इसके बाद अगस्त में थोड़ी कम 98% प्रतिशत वर्षा होगी। इसके उपरांत सबसे ज्यादा वर्षा की उम्मीद सितंबर माह में 110% प्रतिशत तक है।

भारत एक कृषि समृद्ध देश है। भारत में पारंपरिक फसलों के अतिरिक्त सब्जियों और फलों की खेती भी की जाती है। सब्जियों एवं फलों में मोटा मुनाफा देखकर पिछले कुछ वर्षों में किसानों का रुझान इस तरफ तीव्रता से बढ़ा है। बहुत सारे किसान तो पॉलीहाउस तकनीक के माध्यम से ऑफ सीजन की फल–सब्जियों को उगाकर मोटा मुनाफा अर्जित कर रहे हैं। हालांकि, पॉली हाउस तकनीक महंगी होने के चलते प्रत्येक किसान को इसका लाभ नहीं मिल पाता है। इसी बात को मद्देनजर रखते हुए बिरसा कृषि विश्वविद्यालय रांची के कृषि वैज्ञा. निकों ने पॉली हाउस की नवीन तकनीक को विकसित किया है। यह तकनीक किसानों के लिए हर फसल में लाभदायक साबित होगी। इस तकनीक के माध्यम से हर मौसम की फल–सब्जियों को उगाया जा सकेगा।

कृषि वैज्ञानिकों ने विकसित की नवीन पॉली हाउस तकनीक

नया कीर्तिमान स्थापित करते हुए कृषि वैज्ञा. निकों ने ष्छत विस्थापित पॉली हाउसष् नवीन तकनीक को विकसित किया है। पॉली हाउस तकनीक के जरिए किसान साल भर खेती तो कर पाते हैं। लेकिन, उन्हें कई समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। खासकर गर्मियों के मौसम में जब ज्यादा तापमान को नियंत्रित करना मुश्किल हो जाता है। इसी समस्या का समाधान निकालते हुए बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने इस नई तकनीक को इजात किया है। जहां किसान जब चाहे मौसम के अनुसार पॉली हाउस की छत को बदल सकते हैं। इससे वर्ष भर गुणवत्त. ापूर्ण फल और सब्सिजों की पैदावार हो सकेगी।

खुशखबरी: इस नवीन तकनीक से अब हर मौसम में खेती करना हुआ आसान

पॉली हाउस तकनीक इतनी खास क्यों है ?

पॉलीहाउस या ग्रीन हाउस की तकनीक बहुत सारी विशेषताओं को ध्यान में रखती है। यह वातावरण के नियंत्रण, पौधों की वृद्धि, फसलों की सुरक्षा और उचित देखरेख के जरिए उन्हें उचित मात्रा में पोषण प्रदान करने के लिए तैयार किया जाता है। इसके अतिरिक्त पॉलीहाउस को बनाने में कुछ खास तकनीकी दिशा–निर्देशों का पालन करना जरूरी होता है, जैसे कि उचित वातावरण, पौधों की बेहतर देखभाल आदि।इस तरह पॉलीहाउस तकनीक की जरूरत उत्तम वातावरण, पौधों की वृद्धि और फसलों की सुरक्षा के संदर्भ में महत्वपूर्ण है। इसके इस्तेमाल से खुले खेत में खेती की अपेक्षा सब्जियों की विपणन योग्य गुणवत्ता कम से कम 50% प्रतिशत और उत्पादकता 30 से 40 प्रतिशत तक बढ़ जाती है।

ष्छत विस्थापित पॉली हाउसष् कैसे कार्य करता है ?

दरअसल, इस पॉलीहाउस में छत को छोड़कर बाकी पूरा स्ट्रक्चर यूवी स्टेबलाइज्ड कीड़ा रोधी प्लास्टिक से ढंका हुआ रहता है। गर्मी के मौसम में यह यूवी स्टेबलाइज्ड फिल्म (200 माइक्रोन) से ढंका हुआ रहता है। वहीं, जाड़े के मौसम में हरे शेड–नेट से कवर किया हुआ रहता है। इस नए विकसित पॉलीहाउस की खूबी यह मौसम के अनुरूप काम करने के लिए तैयार की गई है। नवंबर महीने से लेकर फरवरी महीने तक पॉलीहाउस के रूप में काम करता है। वहीं, जून से लेकर अक्टूबर महीने तक यह रेन शेल्टर के तोर पर कार्य करता है और फिर मार्च से मई तक यह शेड नेट के रूप में काम करता है। इसमें यह मिट्टी और वायु के तापमान ओर प्रकाश की तीव्रता को नियंत्रित करके इसे साल भर खेती के लिए उपयुक्त बनाता है। इससे सब्जियों की उत्पादकता काफी ज्यादा बढ़ती है।

ज्वार की खेती में बीजोपचार और इसमें लगने वाले कीट व रोगों की रोकथाम से जुड़ी जानकारी

रबी की फसलों की कटाई प्रबंधन का कार्य कर किसान भाई अब गर्मियों में अपने पशुओं के चारे के लिए ज्वार की बुवाई की तैयारी में हैं। अब ऐसे में आपकी जानकारी के लिए बतादें कि बेहतर फसल उत्पादन के लिए सही बीज मात्रा के साथ सही दूरी पर बुआई करना बहुत जरूरी होता है। बीज की मात्रा उसके आकार, अंकुरण प्रतिशत, बुवाई का तरीका और समय, बुआई के समय जमीन पर मौजूद नमी की मात्रा पर निर्भर करती है।

बतादें, कि एक हेक्टेयर भूमि पर ज्वार की बुवाई के लिए 12 से 15 किलोग्राम बीज की आवश्यकता पड़ती है। लेकिन, हरे चारे के रूप में बुवाई के लिए 20 से 30 किलोग्राम बीजों की आवश्यकता पड़ती है। ज्वार के बीजों की बुवाई से पूर्व बीजों को उपचारित करके बोना चाहिए। बीजोपचार के लिए कार्बण्डाजिम (बॉविस्टीन) 2 ग्राम और एप्रोन 35 एस डी 6 ग्राम कवकनाशक दवाई प्रति किलो ग्राम बीज की दर से बीजोपचार करने से फसल पर लगने वाले रोगों को काफी हद तक कम किया जा सकता है। इसके अलावा बीज को जैविक खाद एजोस्पा. इरीलम व पी एस बी से भी उपचारित करने से 15 से 20 फीसद अधिक उपज प्राप्त की जा सकती है।

इस प्रकार ज्वार के बीजों की बुवाई करने से मिलेगी अच्छी उपज ?

ज्वार के बीजों की बुवाई ड्रिल और छिड़काव दोनों तरीकों से की जाती है। बुआई के लिए कतार के कतार का फासला 45 सेंटीमीटर रखें और बीज को 4 से 5 सेंटीमीटर तक गहरा बोयें। अगर बीज ज्यादा गहराई पर बोया गया हो, तो बीज का जमाव सही तरीके से नहीं होता है। क्योंकि, जमीन की उपरी परत सूखने पर काफी सख्त हो जाती है। कतार में बुआई देशी हल के पीछे कुडो में या सीडड्रिल के जरिए की जा सकती है। सीडड्रिल (Seed drill) के माध्यम से बुवाई करना सबसे अच्छा रहता है, क्योंकि इससे बीज समान दूरी पर एवं समान गहराई पर पड़ता है। ज्वार का बीज बुआई के 5 से 6 दिन उपरांत अंकुरित हो जाता है। छिड़काव विधि से रोपाई के समय पहले से एकसार तैयार खेत में इसके बीजों को छिड़क कर रोटावेटर की मदद से खेत की हल्की जुताई कर लें। जुताई हलों के पीछे हल्का पाटा लगाकर करें। इससे ज्वार के बीज मृदा में अन्दर ही दब जाते हैं। जिससे बीजों का अंकुरण भी काफी अच्छे से होता है।

ज्वार की फसल में खरपतवार नियंत्रण कैसे करें ?

यदि ज्वार की खेती हरे चारे के तोर पर की गई है, तो इसके पौधों को खरपतवार नियंत्रण की आवश्यकता नहीं पड़ती। हालाँकि, अच्छी उपज पाने के लिए इसके पौधों में खरपतवार नियंत्रण करना चाहिए। ज्वार की खेती में खरपतवार नियंत्रण प्राकृतिक और रासायनिक दोनों ही ढ़ंग से किया जाता है। रासायनिक तरीके से खरपतवार नियंत्रण के लिए इसके बीजों की रोपाई के तुरंत बाद एट्राजिन की उचित मात्रा का स्प्रे कर देना चाहिए। वहीं, प्राकृतिक ढ़ंग से खरपतवार नियंत्रण के लिए इसके बीजों की रोपाई के 20 से 25 दिन पश्चात एक बार पौधों की गुड़ाई कर देनी चाहिए।

ज्वार की कटाई कब की जाती है ?

ज्वार की फसल बुवाई के पश्चात 90 से 120 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाती है। कटाई के उपरांत फसल से इसके पके हुए भुट्टे को काटकर दाने के लिए अलग निकाल लिया जाता है। ज्वार की खेती से औसत उत्पादन आठ से 10 क्विंटल प्रति एकड़ हो जाता है।

ज्वार की उन्नत किस्में और वैज्ञानिक विधि से उन्नत खेती से अच्छी फसल में 15 से 20 क्विंटल प्रति एकड़ दाने की उपज हो सकती है। बतादें, कि दाना निकाल लेने के उपरांत करीब 100 से 150 क्विंटल प्रति एकड़ सूखा पौष्टिक चारा भी उत्पादित होता है। ज्वार के दानों का बाजार भाव ढाई हजार रूपए प्रति क्विंटल तक होता है। इससे किसान भाई को ज्वार की फसल से 60 हजार रूपये तक की आमदनी प्रति एकड़ खेत से हो सकती है। साथ ही, पशुओं के लिए चारे की बेहतरीन व्यवस्था भी हो जाती है।

ज्वार की फसल को प्रभावित करने वाले प्रमुख रोग और कीट व रोकथाम

ज्वार की फसल में कई तरह के कीट और रोग होने की संभावना रहती है। समय रहते अगर ध्यान नहीं दिया गया तो इनके प्रकोप से फसलों की पैदावार औसत से कम हो सकती है। ज्वार की फसल में होने वाले प्रमुख रोग निम्नलिखित हैं।

तना छेदक मक्खी: इन मक्खियों का आकार घरेलू मक्खियों की अपेक्षा में काफी बड़ा होता है। यह पत्तियों के नीचे अंडा देती हैं। इन अंडों में से निकलने वाली इल्लियां तनों में छेद करके उसे अंदर से खाकर खोखला बना देती हैं। इससे पौधे सूखने लगते हैं। इससे बचने के लिए बुवाई से पूर्व प्रति एकड़ भूमि में 4 से 6 किलोग्राम फोरेट 10% प्रतिशत कीट नाशक का उपयोग करें।

ज्वार का भूरा फफूंदी: इसे ग्रे मोल्ड भी कहा जाता है। यह रोग ज्वार की संकर किस्मों और शीघ्र पकने वाली किस्मों में ज्यादा पाया जाता है। इस रोग के प्रारम्भ में बालियों पर सफेद रंग की फफूंद नजर आने लगती है। इससे बचाव के लिए प्रति एकड़ भूमि में 800 ग्राम मैन्कोजेब का छिड़काव करें।

सूत्रकृमि: इससे ग्रसित पौधों की पत्तियां पीली पड़ने लगती हैं। इसके साथ ही जड़ में गांठें बनने लगती हैं और पौधों का विकास बाधित हो जाता है। रोग बढ़ने पर पौधे सूखने लगते हैं। इस रोग से बचाव के लिए गर्मी के मौसम में गहरी जुताई करें। प्रति किलोग्राम बीज को 120 ग्राम कार्बोसल्फान 25% प्रतिशत से उपचारित करें।

ज्वार का माइट: यह पत्तियों की निचली सतह पर जाल बनाते हैं और पत्तियों का रस चूस कर पौधों को नुकसान पहुंचाते हैं। इससे ग्रसित पत्तियां लाल रंग की हो कर सूखने लगती हैं। इससे बचने के लिए प्रति एकड़ जमीन में 400 मिलीग्राम डा. इमेथोएट 30 ई.सी. का स्प्रे करें।

मेरीखेती अब 6 भाषाओ में उपलब्ध है

हिंदी | English | తెలుగు (Telugu) | ಕನ್ನಡ (Kannada) | ਪੰਜਾਬੀ (Punjabi) | தமிழ் (Tamil)

www.merikheti.com

इस तारीख को मिलेगी 17वीं किस्त सिर्फ ये लोग ही उठा पाएंगे मुनाफा

प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि योजना की 17 वी किस्त का इंतजार कर रहे किसानों के लिए एक बड़ी खुशखबरी है। इस योजना को लेकर एक काफी बड़ा अपडेट आया है। सरकार द्वारा चलाई गई यह बहुत ही महत्पूर्ण योजना है।

इस योजना के अंतर्गत किसानों को हर साल 6000 रुपए की राशि प्रदान की जाती है। इस योजना का लाभान्तित वह किसान है जिसके पास कहती करने योग्य भूमि है। 17 वी किस्त का इन्तजार बहुत से करोड़ो किसान कर रहे है। यह सरकार द्वारा किसानों के लिए चलाई गई बहुत ही महत्वपूर्ण योजना है। हर साल सरकार द्वारा इस योजना के अंतर्गत करोड़ो किसानों को 6000 रुपए की राशि प्रदान की गई है। सबसे अच्छी बात यह भी है अब इस योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए हम ऑनलाइन आवेदन भी कर सकते है। कोई भी किसान अब इस योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए इस योजना में ऑनलाइन आवेदन कर सकते है। किसानों के खाते में 17 वी किस्त की राशि केंद्र सरकार द्वारा खातों में ट्रांसफर की जाएगी।

प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि योजना

प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत किसानों को हर साल 6000 रुपए की राशि 3 किस्तों में प्रदान की जाती है। यह राशि किसानों के खातों में डीबीटी के माध्यम से भेजी जाती है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य किसानों को आर्थिक लाभ प्रदान करना और उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाना ही इस योजना का मुख्य उद्देश्य है। कृषि भारत देश की आधारशिला है, इसीलिए किसानों को खेती के लिए और फसल उगाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इसी को देखते हुए सरकार द्वारा किसानों के लिए बहुत सी योजनाओं का निर्माण किया गया है जैसे रू प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि योजना, फसल बीमा योजना और किसान क्रेडिट कार्ड योजना। इन सभी योजनाओं के अलावा सरकार द्वारा किसानों के लिए चलाई जानें वाली बहुत सी योजनाए है जिनका सीधा आर्थिक लाभ किसान प्राप्त कर सके।

9 करोड़ लाभार्थियों को मिलेगा इस योजना का लाभ

केंद्र सरकार द्वारा 9 करोड़ किसानों के खातों में 17 वी किस्त की राशि प्रदान की गई है। लेकिन जिन किसानों ने अपनी ईकेवाईसी नहीं कराई है वो किसान इस योजना का लाभ नहीं उठा पाएंगे। इसी कारण जिन किसानों ने ईकेवाईसी नहीं कराया है सरकार द्वारा उन किसानों का नाम रिजेक्ट कर दिया गया है। सरकार द्वारा इस योजना के तहत बनाये गए नियमों का किसान को पालन करना होगा तभी वह इस योजना का लाभ उठा पाएंगे।

कब आएगी 17 वी किस्त

17 वी किस्त का सभी किसान बहुत बेशब्री से इन्तजार कर रहे है। लेकिन अभी किसानों को थोड़ा और इंतजार करना पड़ेगा क्यूंकी किसानों के खाते में 16 वी किस्त का हस्तांतरण 28 फरवरी 2024 को ही किया गया है। प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि योजना की 17 वी किस्त की राशि अप्रैल या मई के माह में की जाएगी। प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि योजना की 17 वी किस्त के लिए किसानों को अभी इन्तजार करना पड़ेगा।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की 17 वी किस्त का स्टेटस

- यदि आपको प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि योजना की 17 वी किस्त का स्टेटस चेक करना है तो उसके लिए आपको इस योजना की आधा. रिक वेबसाइट पर जाना होगा।
- आधारिक वेबसाइट पर पहुंचने के बाद उसमे आपको ादवू लवनत`जंजने का ऑप्शन मिलेगा उस पर आपको क्लिक करना होगा।

- इस ऑप्शन पर जानें के बाद एक नया पेज सामने खुल कर आएगा उस पर आपको अपना रजिस्ट्रेशन नंबर डालना होगा। इसके बाद स्क्रीन पर प्रदर्शित हो रहे कैप्चा को डालना होगा।
- इतना करने के बाद गेट ओटीपी वाले ऑप्शन पर क्लिक करें।
- इसके बाद दिए गए मोबाइल नंबर पर ओटीपी प्राप्त होगा और उसके बाद अपनी किस्त का स्टेटस चेक कर सकते है।

इसकी वजह से नहीं आएगी 17 वी किस्त

जिन किसानों को इस योजना के तहत लाभ प्राप्त नहीं हो रहा है इसकी मुख्य वजह है भूमि का रिकॉर्ड न होना। ऐसी स्तिथी में किसान इस योजना का लाभ नहीं उठा सकते है। आप ऑनलाइन भी अपनी प्रोफा. इल में भूमि रिकॉर्ड चेक कर सकते है। प्रोफाइल चेक करने पर यदि भूमि रिकॉर्ड यस बताता है तो इस दिशा में आपको प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि योजना की सभी किस्ते मिलती रहेगी , यदि प्रोफाइल पर भूमि रिकॉर्ड ना बताता है तो आप इस योजना का लाभ नहीं उठा पाएंगे।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना से जुड़ी संपूर्ण जानकारी

भारत एक कृषि प्रधान देश है। कृषि क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था में भी अपनी अहम भूमिका अदा करता है। इसलिए देश की रीढ़ की हड्डी किसान भाइयों की फसल के संबंध में अनिश्चितताओं को दूर करने के लिए नरेन्द्र मोदी की कैबिनेट ने 13 जनवरी 2016 को पीएम फसल बीमा योजना को मंजूरी दी थी।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, किसानों की फसल को प्राकृतिक आपदाओं के चलते होने वाली हानि को किसानों के प्रीमियम का भुगतान देकर एक सीमा तक कम कराने वाली योजना है।

जानें कौन–सी फसल पर कितना प्रीमियम ६ किस्त

पीएम फसल बीमा योजना के लिए 8,800 करोड़ रुपयों को खर्च करने की योजना थी। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अन्तर्गत किसानों को बीमा कंपनियों द्वारा निश्चित, खरीफ की फसल के लिए 2: प्रीमियम और रबी की फसल के लिये 1.5: प्रीमियम का भुगतान करना था। इसमें प्राकृतिक आपदाओं की वजह से बर्बाद हुई फसल के विरुद्ध किसानों द्वारा भुगतान की जाने वाली बीमा की किस्तों को बहुत नीचा रखा गया है, जिनका हर स्तर का किसान आसानी से भुगतान कर सके। ये योजना न केवल खरीफ और रबी की फसलों को बल्कि वाणिज्यिक और बागवानी फसलों के लिए भी सुरक्षा प्रदान करती है, वार्षिक वाणिज्यिक और बागवानी फसलों के लिये किसानों को 5: प्रीमियम (किस्त) का भुगतान करना होता है।

PMFBY का मुख्य उद्देश्य क्या है ?

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना एक ऐसी योजना है, जिसके तहत किसानों को खरीफ की फसल के लिए दो प्रतिशत, रबी और तिलहन फसलों के लिए डेढ़ प्रतिशत और व्यावसायिक तथा बागवानी से जुड़ी फसलों के लिए पांच प्रतिशत की अधिकतम सालाना प्रीमियम राशि देनी होती है। बाकी की प्रीमियम राशि केन्द्र और राज्य सरकारें बराबर–बराबर बांटती हैं। इस योजना का मुख्य उद्देश्य दावों का शीघ्र निपटान करना है। योजना के दिशा–निर्देशों के अनुसार दावों का निपटारा फसल कटाई के दो महीने के भीतर हो जाना चाहिए।

PMFBY का लाभ लेने हेतु अनिवार्य दस्तावेज

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के लिए किसान के पास कुछ अनिवार्य दस्तावेजों का होना बेहद जरूरी है। किसान का पहचान प्रमाण पत्र (आधार कार्ड, राशन कार्ड, पैन कार्ड, वोटर कार्ड)। किसान का पता प्रमाण। (वोटर कार्ड), बैंक अकाउंट की जानकारियाँ जैसे दृ बैंक का नाम, शाखा, अकाउंट नंबर। किसान द्वारा फसल की बुवाई शुरू किए हुए दिन की तारीख और एप्लीकेशन फॉर्म।

इस राज्य में सिंचाई पंप सेट पर मिल रहा भारी अनुदान, जानें आवेदन प्रक्रिया

किसान भाइयों को सिंचाई की बेहतर सुविधा देने के मकसद से प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना चलाई जा रही है। योजना के अंतर्गत कृषकों को कृषि सिंचाई यंत्रों पर सब्सिडी का लाभ मुहैय्या कराया जाता है, जिससे कि वे सिंचाई में काम आने वाले कृषि यंत्रों की सस्ती कीमत पर खरीद कर सकें।

इसी कड़ी में मध्य प्रदेश सरकार की तरफ से कृषकों को सिंचाई पंप सेट पर सब्सिडी दी जा रही है। सिंचाई पंप सेट पर राज्य सरकार की ओर से किसानों को 55 प्रतिशत तक अनुदान दिया जा रहा है। ऐसी स्थिति में किसान आधी कीमत पर सिंचाई के लिए पंप सेट की खरीद कर सकते हैं। इसके लिए राज्य सरकार की तरफ से राज्य के किसानों से आवेदन आमंत्रित किए जा रहे हैं। इच्छुक किसान इस कल्याणकारी योजना के तहत आवेदन करके सब्सिडी का फायदा प्राप्त कर सकते हैं।

पंप सेट का उपयोग किन कार्यों में किया जाता है?

पंप सेट की सहायता से किसान कुएं और तालाब या होद जो भी जल संचय के लिए तैयार किया गया है। इस पंप सेट का उपयोग पानी को बाहर निकालने के लिए किया जाता है। पंप सेट की सहायता से किसान पानी को गहरे जल संचय स्त्रोतों से निकालकर पाइप द्वारा इच्छित जगह पर ले जा सकते हैं। साथ ही, कृषि सिंचा. ई यंत्र की मदद से फसलों की सिंचाई का कार्य कर सकते हैं। सिंचाई पंप सेट दो तरह के होते हैं। पहला डीजल पंप सेट और दूसरा विद्युत पंप सेट। इनकी कीमतें भी भिन्न–भिन्न होती हैं।

सिंचाई पंप सेट पर कितना अनुदान मिलेगा ?

उत्तर प्रदेश सरकार की तरफ से राज्य के किसानों को सिंचाई यंत्रों पर 40 से लेकर 55ः प्रतिशत अनुदान दिया जा रहा है। इसमें पंप सेट पर किसानों को 55ः प्रतिशत अनुदान दिया जाता है। इसमें अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अत्यंत पिछड़ा वर्ग और लघु व सीमांत किसानों को 55ः प्रतिशत सब्सिडी दी जाएगी। जबकि सामान्य किसानों को 40ः प्रतिशत ही अनुदान दिया जाएगा।

योजना का लाभ उठाने के लिए जरूरी कागजात

अगर आप योजना के अंतर्गत सिंचाई पंप की खरीद पर सब्सिडी का लुफ्त उठाना चाहते हैं, तो इसके लिए आपको ऑनलाइन माध्यम से आवेदन करना होगा। आवेदन करते समय आवेदक की आधार कार्ड की कॉपी, बैंक पासबुक के प्रथम पेज की कॉपी, सक्षम अधिकारी द्वारा जारी जाति प्रमाण–पत्र (केवल अनुसूचित जाति एवं जनजाति किसानों के लिए), बी–1 की प्रति, बिजली कनेक्शन का प्रमाण पत्र आदि दस्तावेजों का होना बेहद जरूरी है।

सिंचाई पंप के लिए आवेदन की प्रक्रिया क्या है ?

अगर आप मध्यप्रदेश के किसान हैं, तो आप इस योजना के अंतर्गत पंप सेट खरीदने के लिए अनुदान का लाभ हांसिल कर सकते हैं। योजना के अंतर्गत कृषि सिंचाई यंत्र प्राप्त करने के लिए आप इस योजना की आधिकारिक वेबसाइट https://farmer-mpdage-org/home/LandingIndex पर जाकर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। वहीं, योजना से जुड़ी ज्यादा जानकारी के लिए किसान अपने जनपद के कृषि विभाग से संपर्क साध सकते हैं।

पाइप लाइन के लिए भी अनुदान प्रदान किया जाएगा

मध्य प्रदेश के कृषकों को सिंचाई पंप पर अनुदान के अतिरिक्त खेत में पाइप लाइन बिछाने के लिए भी सब्सिड़ी का फायदा प्रदान किया जाएगा। राज्य के कृषकों को राष्ट्रीय मिशन ऑन ईडिबल ऑइल तिलहन (National Mission on Edible Oil Oilseed), खाद्य एवं पोषण सुरक्षा दलहन (Food and Nutrition Security Pulses), पोषण सुरक्षा गेहूं (nutritional security wheat), पोषण सुरक्षा टरफा योजना (Nutrition Security Turfa Scheme) के तहत किसानों को पाइप लाइन एवं डीजलधविदयुत पंप सेट (Pipe Line and Diesel/Electric Pump Set) पर सब्सिडी का लाभ प्रदान किया जाएगा।

NEW HOLLAND
HAR KAAM MEIN Plus+
Power+ Savings+ Safety+
ROPS with Fiber Canopy
Optimal design ensures safety of tractor
3630 SUPER Plus
6 years T-warranty
1st in Industry

सहजन की खेती से किसानों को मिलेगा अच्छा मुनाफा, जानें वजह

खेती किसानी में एक अच्छी आय की असीमित संभावनाएं और अवसर हैं। आप कुछ अलग करते हैं तो आप इससे काफी मुनाफा कमा सकते हैं। सरकार भी पारंपरिक खेती से अलग हटकर नए विक. ल्पों की ओर देखने के लिए कृषकों को प्रोत्साहित कर रही है। अगर आप भी खेती–किसानी करते हैं और कृषि क्षेत्र में कुछ अलग हट कर करना चाहते हैं, तो आपके लिए औषधीय गुणों से भरपूर सहजन की खेती करना एक बेहतरीन विकल्प साबित होगा। सहजन की देखरेख और लागत में कमी के कारण इससे काफी अच्छी आमदनी होती है। किसान भाई इसकी खेती से लखपति तक बन रहे हैं। औषधीय पौधों की खेती के लिए सरकार की ओर से दी जाने वाली सुविधाएं सहजन की खेती के लिए भी उपस्थित हैं।

जाने वाली सुविधाएं सहजन की खेती के लिए भी उपस्थित हैं।

सहजन की खेती से क्या–क्या फायदे हैं ? सहजन की खेती कम से कम जमीन पर हो सकती है। सजहन की खेती में लागत काफी कम आती है, जिसकी वजह से कृषकों को शानदार आय होती है। सहजन का एक पेड़ कम से कम 10 वर्षों तक फल प्रदान करता है। सहजन के पेड़ का हर भाग काफी लाभदायक होता है और उसकी बिक्री होती है। सहजन के पत्ते, छाल, तना यहां तक की इसकी जड़ भी बिक जाती है। वहीं अगर हम सहजन की विशेषताओं की बात करें तो इसके एक बार बीज की बुवाई करने के बाद चार वर्षों तक चलता है। मतलब कि चार वर्ष तक बुवाई करने की जरूरत नहीं होती। साथ ही, कोई विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता नहीं होती है।

सहजन की खेती के लिए क्या जरूरी है ?

दरअसल, ठंडे राज्यों में सहजन की खेती करने में बेहद कठिनाई आती है। इसके फूल को खिलने के लिए 25 से 30 डिग्री तक का तापमान की जरूरत होती है। डीडी किसान के मुताबिक, सूखी बलुई मृदा या चिकनी बलुई मृदा में सहजन सही तरह से बढ़ता है। भारत में ठंडे राज्यों को छोड़कर लगभग हर हिस्से के किसान इसकी खेती कर सकते हैं। बतादें, कि कोयंबटूर 2, रोहित 1, पी के एम 1, पी के एम– 2 सहजन की प्रमुख उन्नत किस्में हैं।

सहजन का उपयोग किन चीजों में होता है ?

सहजन को एक तरह से प्रकृति का वरदान माना जाता है। इसकी सब्जी से तो हम सब परिचित हैं। इसके अतिरिक्त भी सहजन का उपयोग बहुत सारे अन्य कार्यों में भी होता है। सहजन के बीज के तेल से औषधियां निर्मित होती हैं। छाल, पत्ती, गोंद और जड़ इत्यादि से आयुर्वेदिक औषधियां निर्मित होती हैं।

किसान भाई सहजन की खेती इस प्रकार करें ?

सहजन की खेती के लिए बीज को दिन के समय भिगो दिया जाता है। किसान भाई इसकी बुवाई सूखी मृदा में कर सकते हैं। सहजन की बुवाई के लिए जमीन को 1 फुट चौड़ा और गहरा करना होता है, वहां बुवाई होती है। फिर मिट्टी से भरना होता है। बतादें, कि बुवाई नर्सरी पौधों और बीजों दोनों की होती है। मतलब, आप बीज से नर्सरी पौधा बनाकर भी बुवाई कर सकते हैं। सहजन को शुरुआत में खाद की आवश्यकता होती है। फिर इसके बाद थोड़ी सी सिंचाई की। सहजन के आधा किलो बीज से 2 हेक्टेयर जमीन के लिए पौध तैयार कर सकते हैं। किसान भाई 1500 से 2000 पौधे 1 एकड़ भूमि में उगा सकते हैं।

सहजन के अंदर क्या–क्या गुण होते हैं ?

सहजन को अंग्रेजी में ड्रमस्टिक कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम मोरिंगा ओलिफरा है। यह एक बहुपयोगी पौधा है। इसमें बहुत सारे 300 से ज्यादा औषधीय गुण पाए जाते हैं। इसी वजह से इसकी निरंतर मांग बढ़ रही है। सहजन की खेती करने वाले कृषक लाखों रुपए की आमदनी कर रहे हैं। सहजन में 90 प्रकार के मल्टीविटामिन्स होते हैं। सहजन में 45 प्रकार के एंटीऑक्सीडेंट गुण विघमान होते हैं। सहजन में 35 तरीके के दर्द निवारक गुण विघमान होते हैं। सहजन में 17 प्रकार के एमिनो एसिड होते हैं।

जानिए हरे चारे की समस्या को दूर करने वाली ग्रीष्मकालीन फसलों के बारे में

पशुपालकों को हरा चारा सुनिश्चित करने के लिए काफी अधिक परिश्रम करना पड़ सकता है। भारतीय मौसम विगाग का कहना है, कि इस बार गर्मी अपने चरम स्तर पर पहुँचने की आशंका है। विगत दिनों तापमान में सामान्य से अधिक वृद्धि होने की वजह से पशुपालकों के हरे चारे की उपलब्धता में गिरावट आ रही है। क्योंकि, तापमान में वृद्धि होने के कारण खेतों में नमी की मात्रा में गिरावट देखने को मिल रही है। हरे चारे पर इसका प्रत्यक्ष तौर प्रभाव देखने को मिल रहा है। इस वजह से पशुपालकों को वक्त रहते ही हरे चारे की व्यवस्था सुनिश्चित कर लेनी चाहिए, जिससे आगामी समय में पशु को पर्याप्त चारा हांसिल हो सके। क्योंकि, हरे चारे के अभाव का सीधा प्रभाव पशुओं के दुग्ध उत्पादन क्षमता पर पड़ता है। नतीजतन, पशुपालकों की कमाई में गिरावट आने लगती है।

हरे चारे की किल्लत को दूर करने वाली फसलें इस प्रकार हैं ?

आप सब ने लोबिया, मक्का और ज्वार का नाम तो सुना ही होगा। लेकिन, क्या आप जानते हैं, कि लोबिया, मक्का और ज्वार का चारा पशुओं के लिए बेहद लाभकारी होता है। इसके अतिरिक्त मक्का, ज्वार और लोबिया फसल लगाने से किसान हरे चारे की किल्लत से छुटकारा पा सकते हैं। क्योंकि, यह एक तीव्रता से बढ़ने वाले हरे चारे वाली फसलें हैं। इसके अतिरिक्त इन चारों के साथ सबसे खास बात यह है, कि इनकी खेती करने से खेत की उर्वरक क्षमता को भी प्रोत्साहन मिलता है, जिससे किसान अगली फसल में मुनाफा उठा सकते हैं। वहीं, इसके प्रतिदिन सेवन से पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता में भी इजाफा होता है।

मक्का

पशुओं के लिए पशुपालक हरा चारा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से मक्के की संकर मक्का गंगा–2, गंगा–7, विजय कम्पोजिट जे 1006 अफ्रीकन टॉल, प्रताप चारा–6 आदि जैसी प्रमुख मक्का की उन्नत किस्मों की खेती कर सकते हैं।

ज्वार

गर्मी के मौसम में पशुओं के लिए हरे चारे की किल्लत को दूर करने के लिए ज्वार की पूसा चरी 23, पूसा हाइब्रिड चरी–109, पूसा चरी 615, पूसा चरी 6, पूसा चरी 9, पूसा शंकर– 6, एस. एस. जी. 59–3 (मीठी सूडान), एम.पी. चरी, एस.एस. जी.–988–898, एस. एस. जी. 59–3, • जे.सी. 69. सी. एस. एच. 20 एमजी, हरियाणा ज्वार– 513 जैसी विशेष किस्मों की खेती कर सकते हैं।

लोबिया

लोबिया एक वार्षिक जड़ी–बूटी वाली फलियां हैं, जिसकी खेती बीजों अथवा चारे के लिए की जाती है। इसकी पत्तियाँ अंडाकार पत्तों वाली त्रिकोणीय होती हैं, जो 6–15 सेमी लंबी और 4–11 सेमी चौड़ाई वाली होती हैं। लोबिया के फूल सफेद, पीले, हल्के नीले या बैंगनी रंग के होते हैं। इसकी फली जोड़े में पाई जाती हैं। इसकी प्रति फली में 8 से 20 बीज होते हैं। इसके साथ ही बीज सफेद, गुलाबी, भूरा या काला होता है।

खेती और दुधारू पशुओं के लिए उत्तम है अजोला, जाने अजोला की खेती के बारे में सम्पूर्ण जानकारी

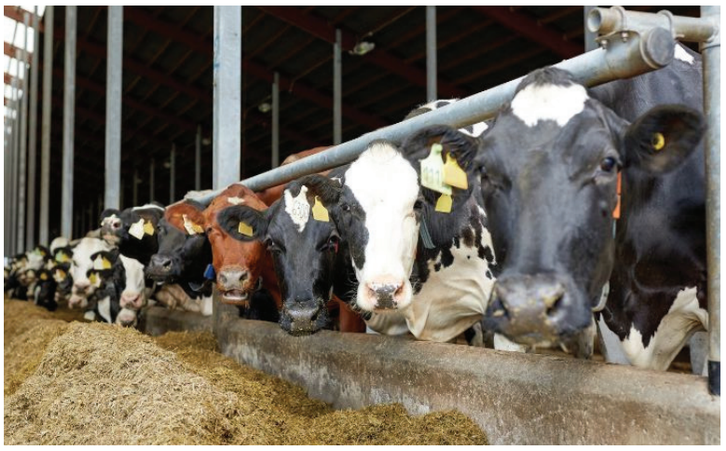

अजोला को जैव उर्वरक के रूप में जाना जाता है, यह अजोला धान की उच्च और अधिक पैदावार के लिए काफी सहायक है। इसके अलावा इसका उपयोग पशुओं के चारे के लिए भी किया जाता है।

अजोला धान के उर्वरक क्षमता को बढ़ाने में काफी सहायक है, इसके अलावा इसका उपयोग मुर्गी पालन, मछली पालन और पशु के चारे के उपयोग में किया जाता है। यह एक जलीय फर्न है जो पानी के सतह पर तेजी से बढ़ता या फैलता है।

क्या है अजोला ?

जैसा की आप सभी को बता दिया गया है यह एक जलीय फर्न है। अजोला समशीतोषड जलवायु में पाया जाता है। यह अजोला पानी पर एक हरी परत के जैसे दिखाई देता है। फर्न के निचले हिस्से में सिम्बोइंट के रूप में ब्लू ग्रीन एल्गी सयानोबैक्टीरिया पाया जाता है। यह सयानोबैक्टी. रिया वायुमंडल में नाइट्रोजन को परिवर्तित करता है। नाइट्रोजन मिट्टी के लिए काफी गुणकारी होता है।

भारत में पायी जाने वाली अजोला की किस्म ?

भारत में अजोला की पायी जाने वाली केवल एक ही किस्म है। भारत में पायी जाने वाली अजोला किस्म का नाम पिन्नाटा है। अजोला की यह किस्म काफी हद तक गर्मी सहन कर लेती है।

अजोला की खेती कैसे करें ?

अजोला की खेती के लिए किसी छायादार स्थान पर 60 ग 10 ग 2 मीटर की क्यारियां बनाये। इन क्यारियों में 120 गेज की सिलपुटिन शीट को बिछाकर किनारो पर मिट्टी का लेप कर देना चाहिए। इन क्यारियों में 80 से 100 उपजाऊ मिट्टी की परत को बिछा दे। इसी के सात 3 से 4 दिन पुराना गोबर लेकर उसे पानी में मिलाकरमिट्टी पर छिड़क दे। क्यारियों में 400 से 500 लीटर पानी भरे ताकि क्यारियों में पानी की गहराई 10 से 15 तक हो जाये। उपजाऊ मिट्टी और गोबर खाद को मिट्टी में अच्छे से मिश्रित कर ले और उसके ऊपर कम से कम 2 किलो ताजा अजोला को फैला दे।

अजोला को फैलाने के बाद उस पर 10 लीटर पानी को छिड़क दे ताकि अजोला अपनी जगह पकड़ ले। अब क्यारियों को नायलॉन जाली से ढक दे। 15 से 20 दिन बाद अजोला की उपज को बढ़ाने के लिए उसमे 20 ग्राम सुपरफॉस्फेट और 50 किलोग्राम गोबर का घोल बनाकर हर महीने दे।

अजोला की खेती से होने वाले फायदे क्या है ?

अजोला की खेती से मिलने वाले बहुत से ऐसे लाभ है जो खेती के अलावा पशु दुग्ध उत्पादन पतऔर अन्य चीजों में यह बेहद लाभकारी है, आइये बात करते है अजोला की खेती से होने वाले फायदों के बारे में।

- मुर्गियों को रोजाना अजोला खिलाने से उनके शारीरिक भार और अंडा उत्पादन क्षमता में 10 से 15 प्रतिशत वृद्धि होती है।
- इसके अलावा भेड़ और बकरियों को ताजा अजोला खिलाने से शारीरिक और दुग्ध उत्पादन दोनों में ही वृद्धि होती है।
- अजोला को हरी खाद के रूप में खरीफ और रबी दोनों जलवायु में बड़े पैमाने पर उगाया जा सकता है।
- अजोला वायुमंडल में उपस्थित नाइट्रोजन और कार्बनडाइ. ऑक्साइड को अमोनिया और कार्बोहायड्रेट में बदल देता है।
- यह मिट्टी में उपस्थित सूक्ष्म जीवों और फसलों की जड़ों में स्वसन किर्या में सहायक होता है।
- यह खेती में विटामिन और ग्रोथ रेगुलेटर उत्पन्न करता है , जिससे धान के पौधों का अच्छे से विकास हो जाता है।
- अजोला रासायनिक उर्वरक की क्षमता को बढ़ाने में सहायक है , साथ ही यह वाष्पीकरण की दर को भी नियंत्रित करके रखता है।

अजोला में पाए जाने वाले पौष्टिक आहार

अजोला में बेहद प्रकार के पौष्टिक आहार पाए जाते है जैसे य प्रोटीन, एमिनो एसिड, विटामिन ठ–12, बीटा कैरोटीन , विटामिन ए, फास्फोरस, कैल्शियम, आयरन, पोटेशियम, मैगनेशियम, कॉपर जैसे खनिज भी अजोला में पर्याप्त मात्रा में पाए जाते है। अजोला के अंदर कार्बोहायड्रेट और वसा की बहुत कम मात्रा पायी जाती है। इसके अलावा शुक्ष्म अजोला में 10 से 15 प्रतिशत खनिज पदार्थ , 40 से 60 प्रतिशत प्रोटीन और 7 से 10 प्रतिशत एमिनो अम्ल, जैविक पदार्थ के अलावा पॉलिमर्स भी पाया जाता है।

अजोला की कीमत

अजोला का बाजारी भाव 1 रुपए किलोग्राम होता है जबकि वियतनाम में इसकी कीमत 100 ऑस्ट्रेलियन डॉलर प्रति टन है। प्रति सप्ताह 10 टन अजोला 1 हह वर्गमीटर से प्राप्त किया जा सकता है।

पशुओं को गर्मी से बचाने के लिए विशेषज्ञों की महत्वपूर्ण सलाह

भारत के अधिकांश किसान खेती–किसानी के साथ–साथ पशुपालन कर दुग्ध उत्पादन से भी अच्छी आय करते हैं। लेकिन, ऐसे भी किसान हैं, जिनकी आजीविका ही पशुपालन से चलती है। वर्तमान में रबी की फसलों की कटाई का समय चल रहा है। किसान अब जायद की फसलों की बुवाई की तैयारी में जुटेंगे। अब ऐसे में आज हम पशुपालन करने वाले किसानों को गर्मी के समय पशुओं के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। पशुपालक अपने पशु को दिन में कम से कम तीन बार पीने के लिए साफ पानी दें। साथ ही, हरा चारा आहार स्वरूप अधिक खिलाएं। इसके लिए ? मूंग मक्का या अन्य हरे चारे की बुआई कर दें।

गर्मियों में पशुओं की देखभाल क्यों जरूरी ?

गर्मी के बढ़ने से मनुष्यों के साथ–साथ पशु पक्षियों को भी काफी दिक्कत होती है। इसलिए, किसान भाइयों को अपने दुधारू पशुओं की सही से देखभाल करने की आवश्यकता है। ऐसे मौसम में अपने पशुओं की उचित देखरेख नहीं करने से सूखा चारा खाने की मात्रा दस से 30 फीसद और दूध उत्पादन में दस फीसद तक की कमी हो सकती है। इस पर विशेष ध्यान देने की अत्यंत आवश्यकता है।

आहार को लेकर विशेषज्ञों की महत्वपूर्ण सलाह

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार, गर्मी के मौसम में दुग्ध उत्पादन और पशु की शारीरिक क्षमता बनाए रखने के लिए पशुओं में आहार का महत्वपूर्ण योगदान है। गर्मी के मौसम में पशुओं को हरे–चारे की ज्यादा मात्रा देनी चाहिए। पशु हरे–चारे को बड़े ही चाव से खाते हैं। इसके साथ ही इससे 70 से 90 फीसद तक पानी की मात्रा होने से शरीर में जल की पूर्ति करता है। गर्मी के मौसम में हरे चारे का अत्यंत अभाव रहता है। इसके लिए किसानों को मार्च या शुरू अप्रैल माह में ही मूंग, मक्का या अन्य हरे चारे की बुआई कर दें। इससे गर्मी में भी पशुओं को हरा चारा मिलता रहे।

पशुपालकों के लिए पशुओं के आवास हेतु सलाह

पशुपालकों को अपने पशुओं को गर्मी से बचाने के लिए छांव में रखने की आवश्यकता है। इससे पशुओं पर गर्म हवाओं का सीधा प्रभाव नहीं पड़ेगा। रात्री के दौरान पशुओं को खुले में ही रखें। अगर पशुओं के आवास की छत एस्बेस्टस या कंक्रीट की है तो उसके ऊपर चार से छह इंच मोटी घास– फूस रख दें। इससे पशुओं को गर्मी से निजात मिलती है। इसके साथ ही पशुओं को तीन से चार बार ताजा एवं स्वच्छ पानी जरूरी पिलाएं। इससे पशुओं के स्वास्थ्य पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही, किसी भी प्रकार की बीमारी होने पर शीघ्र डॉक्टर से सलाह लें।

भारत में पाई जाने वाली इस नस्ल की गाय का दुग्ध उत्पादन में पहला स्थान

भारत के अंदर विभिन्न प्रकार की गायों की नस्लें पाई जाती हैं। कृषि के साथ–साथ पशुपालन किसानों की आय बढ़ाने में काफी सहयोगी भूमिका अदा करता है। पशुपालकों के लिए गाय पालन उनकी आय को बढ़ाने के लिए सबसे अच्छा स्त्रोत माना जाता है। अब ऐसे में पशुपालन करने वाले किसानों को गाय की अच्छी नस्ल का चयन करना महत्वपूर्ण होता है। इसलिए आज के इस लेख में हम आपको गाय की ऐसी नस्ल की जानकारी देंगे जो कि सबसे ज्यादा दूध देती है। दरअसल, हम आज आपको बताऐंगे गाय साहीवाल नस्ल (Sahiwal Breed Cow) के बारे में। वैज्ञानिक ब्रीडिंग के माध्यम से देसी गायों की नस्ल में सुधार कर उन्हें साहीवाल नस्ल में परिवर्तित किया जा रहा है। हरियाणा राज्य के अंदर बड़ी संख्या में इस नस्ल की गाय होती हैं। वहीं, पंजाब और राजस्थान में भी साहीवाल पशुओं के लिए कुछ गौशालाएं तैयार की गई हैं।

साहीवाल नस्ल की किस प्रकार जान–पहचान की जाती है

दुधारू गाय की साहीवाल नस्ल की गायों का सिर चौड़ा, सींग छोटे और मोटे साथ ही शरीर मध्यम आकार का होता है। गर्दन के नीचे लटकती हुई भारी चमड़ी और भारी लेवा होता है। साहीवाल गायों का रंग अधिकतर लाल और गहरे भूरे रंग का होता है। इस नस्ल की कुछ गायों के शरीर पर सफेद चमकदार धब्बे भी पाए जाते हैं। इस नस्ल के वयस्क बैल का औसतन भार 450 से 500 किलो और मादा गाय का वजन 300–400 किलोग्राम तक हो सकता है। बैल की पीठ पर बड़ा कूबड़ जिसकी ऊंचाई 136 सेमी तथा मादा की पीठ पर बने कूबड़ की ऊंचाई 120 सेमी के आसपास होती है।

पशुपालक यहां से शुद्ध नस्ल के पशु या गाय प्राप्त कर सकते हैं

साहीवाल गाय अधिकतम उत्तरी भारत में पाई जाने वाली महत्वपूर्ण नस्ल है। बतादें, कि इसका उदगम स्थल पाकिस्तान पंजाब के मोंटगोमरी जिले और रावी नदी के आसपास का है। सबसे ज्यादा दूध देने वाली यह नस्ल पंजाब के फिरोजपुर और अमृतसर जैसे जनपदों में पाई जाती है। वहीं, राजस्थान के श्री गंगानगर जिले में इस नस्ल की गाय हैं। वहीं, पंजाब में फिरोजपुर जिले के फाजिल्का और अबोहर कस्बों में शुद्ध साहीवाल गायों के झुंड के झुंड देखने को मिल जाएंगे।

साहीवाल गाय की विशेषताएं या खूबियां क्या–क्या हैं ?

साहीवाल (Sahiwal) नस्ल की गाय एक बार ब्याने पर 10 महीने तक दूध देती है। वहीं, दूध काल के दौरान ये गायें औसतन 2270 लीटर दूध देती हैं। यह प्रतिदिन 10 से 16 लीटर दूध देने की क्षमता रखती हैं। साहीवाल गाय अन्य देशी गायों की अपेक्षा अधिक दूध देती हैं। इनके दूध में बाकी गायों के तुलनात्मक अधिक प्रोटीन और वसा मौजूद है।

साहीवाल गाय की प्रजनन प्रक्रिया क्या है ?

गाय के पहले प्रजनन की अवस्था जन्म के 32–36 महीने में आती है। इसकी प्रजनन समयावधि में 15 महीने का समयांतराल होता है। गाय की देशी नस्ल होने की वजह से इसके रखरखाव और आहार पर भी अधिक खर्च करना नहीं पड़ता। यह नस्ल ज्यादा गर्म इलाकों में भी आसानी से रह सकती है। इनका शरीर बाहरी परजीवी के प्रति प्रतिरोधी होता है, जिससे इसे पालने में अधिक मशक्कत नहीं करनी पड़ती है।

साहीवाल गाय की कीमत कितनी होती है ?

साहीवाल गाय की कीमत ॅ(िपूंस ब्ू च्तपबम) इसके दूध उत्पादन की क्षमता, उम्र, स्वास्थ्य इत्यादि पर निर्भर करती है। यदि अनुमा. नित तोर पर बात करें तो साहीवाल गाय तकरीबन 40 हजार से 60 हजार रुपए की कीमत के आसपास खरीदी जा सकती है।

BRAJDHAM

BRAJDHAM
FARMS & RESORT

Best place to Celebrate Your Day

www.brajdhamfarms.com

पूर्व सैनिक महेंद्र सिंह ने बंजर जमीन पर शुरू की केसर की खेती

केसर की खेती करना न सिर्फ आर्थिक लाभ कमाना है बल्कि यह एक सामाजिक प्रेरणात्मक कार्य भी है। पूर्व सैनिक महेंद्र सिंह ने बंजर जमीन पर केसर की खेती कर लाखो रुपया कमाए है। इस कार्य से युवा और किसान भी प्रेरित होकर रोजगार के अवसर प्राप्त कार सकते है। पूर्व सैनिक महेंद्र सिंह जो की ज्वाली विधानस. भा के सुकनाड़ा पंचायत से सम्बन्धित है उन्होंने अपनी मेहनत और द्रढ़ संकल्प से बंजर भूमि को उपजाऊ बना दिया है। महेंद्र सिंह ने चार मरला खेत में केसर की खेती की जिसे न केवल उनकी आर्थिक स्थिति में सुधर आया बल्कि सभी स्थानीय किसानों को भी उससे प्रेरणा मिली है। नगरोटा सूरियां क्षेत्र में उन्होंने कृषि को अपने ज्ञान और रुचि के आधार पर एक नयी दिशा प्रदान की है। मीडिया के द्वारा बताया गया है की मेह्द्र सिंह ने लगभग 17 साल तक सेना में अपनी सेवाएं दी है। साथ ही उन्होंने ये भी बताया उनकी पत्नी संतोष भी इस कार्य में अपना सहयोक प्रदान करती थी।

दोस्त से मिली खेती की प्रेरणा

महेंद्र सिंह पठानिया ने बताया उन्हें अपने दोस्त से इस खेती के लिए प्रेरणा मिली थी। साथ ही इसके अलावा केसर की खेती के लिए भी बीज भी उन्ही के दोस्त ने उपलब्ध कराया था। महेंद्र सिंह पठानिया ने केसर की खेती चार मरले भूमि में की थी इस वक्त उनकी यह खेती पैदावार भी देने लगी है , रोजाना वो केसर के फूल तोड़कर उन्ही एकत्रित करते है। केसर की खेती के अलावा महेंद्र सिंह पठानिया ने तीन कनाल भूमि पर द्वितीय किस्म के चावल की खेती भी की थी, जिसकी पैदावार बी काफी अच्छी रही। उन्होंने यह भी बताया यदि खेती के लिए पर्याप्त पानी मिलता रहे तो नगरोटा के किसान नगदी फसलों का उत्पादन कर बेहतर कमा सकते है, उन्हें छोटी मोटी नौकरियों के लिए इधर उधर नहीं भटकना पड़ेगा।

मेहन्द्र सिंह पठानिया ने यह भी बताया नगरोटा क्षेत्र के किसानों के पास भूमि तो है लेकिन खेती करने और सिंचाई के लिए पर्याप्त पानी नहीं है। सिंचाई सुविधा के अभाव में किसान खेती नहीं कर पाते है। सिंचाई सुविधाओं के अभाव को लेकर महेंद्र सिंह पठानिया ने सरकार से भी इस मामले में बात की है ताकि खेती से पीछे हटने वाले किसानों को अच्छी नकदी फसलों की पैदावार के लिए प्रेरित किया जा सके। मेहन्द्र सिंह पठानिया द्वारा की गई कर की खेती से युवा और किसान भी काफी प्रेरित हुए है। केसर की खेती और नकदी फसल की खेती से प्रेरित होकर किसान रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकता है।

केसर की खेती कैसे करें ?

सबसे पहला प्रश्न आता है की केसर की खेती कैसे और उसकी पैदावार के लिए कैसी जलवायु चाहिए, कितनी सिंचाई करें किस प्रकार की भूमि और मिट्टी की आवश्यकता पड़ेगी।

1 भूमि का चयन और तैयारी

केसर की खेती के लिए सबसे पहले भूमि का चयन करना पड़ता है, उसके बाद केसर की बुवाई के लिए भूमि को तैयार किया जाता है। केसर की खेती के लिए अच्छे जल निकास वाली भूमि की आवश्यकता रहती है इसके बाद भूमि की अच्छे से जुताई कर ले। जुताई के बाद भूमि को पाटा लगाकर अच्छे से समतल बना ले और भूमि को बुवाई के लिए तैयार कर ले।

2 बीजो का चयन और रोपण

भूमि को तैयार करने के बाद बीजो का चयन करें, ध्यान रहे बीज किसी रोग से ग्रस्त न हो। बुवाई करने से पहले बीजो को उपचार कर ले। रोपण के लिए उच्च गुणवत्ता वाले बीजो का चयन करें और केसर की खेती का सही समय सितम्बर से अक्टूबर माह के बीच में होता है।

3 सिंचाई

केसर की बुवाई के बाद खेत में सिंचाई का कार्य नियमित रूप से किया जाता है। सिंचाई का कार्य खासकर रोपण के बाद वाले महीनो में ज्यादा. तर किया जाता है।

4 खाद और उर्वरक

केसर की खेती में रासायनिक खादों का कम उपयोग किया जाता है। केसर की खेती में ज्यादातर जैविक गोबर खाद या डीकम्पोस्ट खाद का उपयोग ज्यादातर किया जाता है।

5 कटाई और उत्पादन

केसर की कटाये या फूलो को सुबह के वक्त तोड़े क्योंकि उस समय केसर के पौधे खिले हुए होते है। फूलो को तोड़ने के बाद उन्हें धूप में सूखा दे।

2 साल में मोती की खेती से किसान बसंत ने कमाए 18 लाख रुपए

हरियाणा राज्य के फतेहाबाद जिले के गांव सिंबलवाला में रहने वाले किसान बसंत सैनी ने सिप की खेती कर 2 साल में 18 लाख रुपए कमा लिए है। सिप की खेती के लिए उन्होंने 3 साल पहले कोरोना काल के वक्त अपना मन बनाया था।लगभग डेढ़ साल तक उन्होंने इस खेती पर स्टडी की और सितम्बर 2023 में उन्होंने सिप की खेती का कार्य शुरू कर दिया। सिप की खेती में लगभग 4 लाख रुपए का खर्च आया। उन्होंने बताया सिप की खेती काफी लाभदायक है। बसंत सैनी डबल एमए करे हुए है उन्होंने सिप की खेती आधे कनाल में की थी जिससे उन्हें इतना फायदा हुआ। सिंबलवाला गांव में वो ऐसे अकेले व्यक्ति है जो सिप की खेती कर रहे है। बसंत सैनी ने बताया बाजार में मोतियों की काफी डिमांड है इसलिए उन्होंने इसकी खेती शुरू की। साथ ही उन्होंने यह भी बताया सिप की एक एकड़ खेती से लाखों रुपया कमाया जा सकता है।

बसंत सैनी ने बताया सिप की खेती के लिए ट्रेनिंग बहुत जरूरी है। सिप की खेती के लिए पहले सिप लानी पड़ती है , जो हमारे आस पास नहीं मिलती है वो बहार से मँगानी पड़ती है। सिप दो प्रकार की होती है एक जो समुन्द्र में मिलती है और दूसरी जो साफ पानी में तैयार की जातीं है। सिप की खेती के लिए नेहरी पानी की ज्यादा आवश्यकता होती है। सिप के अंदर न्यूक्लियस डालकर सिप को फ्रेश पानी में डाल दिया जाता है। इसके बाद पानी में फीड डाली जातीं है क्योंकि अगर पानी में लाल कीड़े पड़ गए तो वह सिप को नष्ट कर देते है।

पानी की क्वालिटी

मोती की अच्छी किस्म के लिए पानी की हर हफ्ते जांच होती है। पानी को चेक करने के लिए पानी के टैंक में हर हफ्ते अमोनिया, टीडीएस और ऑक्सीजन चेक करना होता है। मोती की खेती में पानी एक अहम भूमिका निभाता है। मोती को तैयार होने में लगभग 2 साल का समय लगता है। लेकिन सवा साल में आधा मोती तैयार हो जाता है लेकिन पूरे मोती को पाने के लिए 2 साल तक इंतजार करना पड़ता है। सिप के अंदर से मोती को बड़ी सधानी से निकाला जाता है, सावधानी न बरतने पर सिप मर भी सकती है।

कहाँ – कहाँ होता है प्रयोग ?

मोती की कीमत उसकी शेप, वजन और गुणवत्ता के आधार पर तय की जातीं है। एक मोती की कीमत 5000 से 50000 हो सकती है। आभूषण बनाने के अलावा इसका उपयोग आयुर्वेदिक दवाइयों में भी किया जाता है। छोटी छोटी मूर्तियां बनाने और महिलाओं के कॉस्मेटिक मेकअप बनाने में भी इसका उपयोग किया जाता है। बाजार में मोती की बहुत कीमत है जितनी गुणवत्ता वाला मोती होगा उसकी उतनी ही ज्यादा कीमत होगी।

IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
Wholly owned by Cooperatives

इफको नैनो यूरिया (तरल)

के साथ आया

इफको नैनो डीएपी (तरल)

बेहतर फसल और अधिक लाभ पाना हुआ अब और भी सरल

MERIKHETI

किसानो की बात
मेरी खेती के साथ

www.merikheti.com

Contact No : +91 8800777501
Address : 5A-46, 6th Floor, Cloud 9 Tower, Vaishali,
Sector -1, Ghaziabad - 201010